शिव आमंत्रण
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
रक्षाबंधन विशेष
वर्ष : 13, अंक : 8, हिन्दी (मासिक), अगस्त 2026, पृष्ठ 16, मूल्य: 17:50 रु.

रक्षाबंधन पर विशेष

आइए... इस रक्षाबंधन पर स्वयं को पवित्र विचारों के बंधन में बांधने का संकल्प लेते हैं

पवित्रता की रक्षा का प्यारा बंधन

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान

रक्षाबंधन... भाई-बहन के स्नेह, पवित्रता, निश्छल प्रेम, त्याग, समर्पण का पावन पर्व है। यह न केवल भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है, बल्कि स्वयं को मन-वचन-कर्म से पावन बनाने की दिव्य साधना का महा उत्सव भी है। हम सभी बचपन से रक्षाबंधन मनाते आए हैं लेकिन आइए, इस बार इसे यादगार, प्रेरक और जीवन परिवर्तनकारी उत्सव के रूप में मनाते हैं। मन-वचन-कर्म से स्वयं की स्यवं ही व्यर्थ व नकारात्मक विचारों से रक्षा करने और परमात्म श्रीमत अनुसार पवित्रता के बंधन में बंधने का संकल्प लेते हैं। एक ऐसा बंधन जो सुखदाई है, परिवर्तनकारी है और दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कल्याणकारी बंधन है।

पवित्रता का रक्षासूत्र बांधने का सही समय

दुनिया महापरिवर्तन के दौर से गुजर रही है। हर चीज अपने अति में जा रही है। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने से अनेक तरह की आपदाएं हमारे सामने हैं, वहीं वैश्विक स्तर पर छाए अशांति के बादल एक सुख-शांतिमय दुनिया के लिए कदापि ठीक नहीं हैं। ऐसे समय में परमात्म श्रीमत और पवित्रता का दिव्य मार्ग ही दुनिया को नया रास्ता, नई रोशनी दिखा सकता है। परमात्म शिक्षा के आधार से ही दुनिया में शांति स्थापित हो सकती है। विश्व शांति की इस मुहिम की शुरुआत भी हो चुकी है। परमधाम निवासी स्वयं परमपिता शिव परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर नई पावन, सतयुगी दुनिया की स्थापना की नींव रख रहे हैं। परमात्मा सहज राजयोग के ज्ञान से मानव को देवतुल्य बनने का महान मार्ग दिखा रहे हैं।

परमात्मा की पुकार को सुनकर आज लाखों भाई-बहनें पवित्रता के इस पावन मार्ग के राही बनकर निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। इससे न केवल उनका जीवन बदला है, बल्कि आज वह समाज में प्रेरक, आदर्श और मार्गदर्शक बनकर अनेकों का जीवन परिवर्तन करने के निमित्त भी बने हैं। परमात्मा की पुकार है- हे! मनुष्य आत्मन्... स्वयं को पहचानो और पवित्रता का रक्षासूत्र बांधकर अपना जीवन धन्य-धन्य बनाओ।

तिलक...

भारतीय संस्कृति में शुभ कार्य के शुरू करने के पूर्व तिलक किया जाता है। तिलक शुभ, विजय और आत्म स्मृति का प्रतीक है। तिलक भृकुटी के बीच किया जाता है। शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा भी भृकुटी के मध्य विराजमान रहती है। वास्तव में तिलक आत्मा की ज्योति स्वरूप का प्रतीक है। यह हमें याद दिलाता है कि दुनिया में रहते, कर्म करते सदा आत्म स्मृति बनी रहे। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों! स्वयं को आत्मा समझ मुझे निरंतर याद करो तो मैं तुम्हें सर्व दुखों और पापों से मुक्त कर दूंगा और स्वर्ग की बादशाही दूंगा।

रक्षा सूत्र...

किसी भी धार्मिक कार्य में ब्राह्मण, यजमान को मंत्रोच्चार के साथ रक्षासूत्र बांधते हैं। चूंकि ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य व्रत के साथ सभी नियमों का पालन करता हो) पवित्र होते हैं इसलिए रक्षासूत्र बांधने के लिए वह योग्य हैं। इसी तरह भाई-बहन का रिश्ता भी दुनिया में सबसे पवित्र होता है, इसलिए बहनें, भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं। आज हर एक मानव आत्मा को व्यसन, बुराइयों, गलत आदतों, नफरत, हिंसा से दूर रहने का रक्षासूत्र बांधने की जरूरत है।

उपहार या भेंट...

क्यों न इस बार रक्षाबंधन पर हर भाई अपनी बहन से संकल्प करे कि मेरी बहना आज से मैं तुम्हारी तरह हर एक बहन की लाज की रक्षा करुंगा। हर एक बहन-बेटी का मान रखूंगा। एक बहन के लिए भाई का दिया ये संकल्प और उपहार सबसे बड़ा उपहार है। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों! तुम मुझे अपनी बुराइयों देकर सदा-सदा के लिए सुख- शांति, आनंद का वर्सा ले लो।

शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें

जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज होता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। आइए शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें और एकता को अपने कर्मों में प्रकट करें। ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहन समाज में सुख-शांति, आनंद, प्रेम और विश्वास का संवाहक बनकर जन-जन तक ज्ञान पहुंचा रहे हैं। स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें।

*- **द्रौपदी मुर्मु,** राष्ट्रपति*

अध्यात्म हमें सिर्फ शांति का पाठ ही नहीं सिखाता, वह हमें हर कदम पर शांति की राह भी दिखाता है। विश्व शांति की अवधारणा, ये भारत के मौलिक विचार का हिस्सा हैं। मैंने इस आध्यात्मिक आंदोलन को वटवृक्ष की तरह विशाल होते देखा है। बदलाव तब होता है, जब अपने कथन और करनी में उतारा जाए और यही ब्रह्माकुमारी संस्था की आध्यात्मिक शक्ति का स्त्रोत है। मैंने हमेशा अनुभव किया है, ब्रह्माकुमारीज़ में शब्द कम, सेवा ज्यादा है। जहां हर बहन पहले कठोर तप और साधना में खुद को तपाती है।

*- **नरेंद्र मोदी,** प्रधानमंत्री*

आखिर किसे रक्षा की जरूरत है...?

दुनिया का सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल होता है। पवित्रता की शक्ति से ही विश्व परिवर्तन और नवयुग का सृजन होता है। कुंवारी कन्या की हम देवी का रूप मानकर पूजन करते हैं। लेकिन जब कन्या का विवाह हो जाता है तो वह सबके सामने शीश नवाने लगती है। कन्या को उसकी पवित्रता के कारण देवी स्वरूप का दर्जा दिया जाता है। जिसने पवित्रता की रक्षा कर ली तो उसका जीवन दिव्य, महान और आचरण योग्य बन जाता है। परमात्मा का भी दिव्य संदेश है कि यह नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है मेरे बच्चों पवित्र बनो, योगी बनो।

*- **राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

नई सृष्टि के सृजन का आधार है पवित्रता

शिव आमंत्रण, आबूरोड

शास्त्रों में उल्लेख है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर अंधकार-अज्ञान, पाप कर्म बढ़ जाते हैं, तब-तब नई दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजन करने के लिए परमपिता परमात्मा युगे-युगे अवतरित होते हैं। वह पवित्रता के बल से मनुष्य को पतित से पावन बनाकर नई दुनिया के योग्य बनने की शिक्षा देते हैं। रक्षाबंधन इसी पवित्रता और नई शुरुआत का प्रतीक है। ये बंधन से अपनी पवित्रता की रक्षा करने का और नई दुनिया को सृजन का महापर्व है।

परमात्मा ने आकर नारी शक्ति को संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया

रक्षा बंधन इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। परमपिता शिव परमात्मा ने इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर कन्याओं-माताओं को मन-वचन-कर्म की संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया। संपूर्ण पवित्रता का व्रत धारण करने के कारण और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में शिरोधार्य करने वाले ब्रह्मा वत्स ब्राह्मण कहलाए। उन्हें ब्राह्मण पद पर आसीन किया। ज्ञान का कलश दिया और सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बांधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की रक्षा करती हैं।

ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, दूसरे बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है

मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बंधन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु रक्षा बंधन को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है। बंधन दो प्रकार के होते हैं एक है ईश्वरीय बंधन और दूसरे हैं सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, परन्तु दूसरे प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बंधन में तो बंधना चाहते हैं परन्तु माया के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। जैसे आज आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म क्षीण हो जाने से संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है, वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

परमात्मा को ही संकट मोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं

सदा के लिए दुःखों और संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा कर सकते हैं। कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती है। परमात्मा को ही संकटमोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। प्रकृति तो उनकी दासी है। मनुष्यों को माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता को पुकार कर कहते हैं- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा...। गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है।

भगवान् ही हैं माताओं के चीर बढ़ाते हैं

दुष्टों से पवित्रता की रक्षा वास्तव में सर्व समर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए महाभारत का यह प्रसंग प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था, क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। ऐसी आपदा में लोग भगवान् को ही पुकारते हैं- हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो। भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के चीर बढ़ाते हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं हे प्रभु, मुझे सहारा दो।

आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पांचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बांधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अतः 'रक्षाबंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है। बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बंधन बांधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनाएंगे। मन, वचन

और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों द्वारा रक्षाबंधन बंधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बंधन बांधते हैं, ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से रक्षाबंधन बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है।

पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री,
कथावाचक व पीठाधीश्वर, बागेश्वर धाम सरकार, गड़ा, छतरपुर, मप्र

ब्रह्माकुमारी की दीदियां मोह माया से परे समाज के कल्याण और उत्थान के लिए कार्य कर रही हैं। इन दीदियों के चेहरे की चमक बताती है कि इन्होंने जीवन में कुछ पाया है। जीवन से खुश हैं। इनका समर्पण भाव लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। इनके जीवन से हमें सीख लेने की जरूरत है।

डॉ. लोकेश मुनी
संस्थापक, अहिंसा विश्व भारती, नई दिल्ली

यह ब्रह्माकुमारीज़ परिवार विश्व का एकमात्र परिवार है जो दुनिया के 140 देश के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों के लिए, नैतिक मूल्यों के उत्थान के लिए, शांति और सद्भावना के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रहा है। ये कार्य माता और बहनों के द्वारा हो रहा है।

जगतगुरु देवमुरारी बापू,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीकृष्ण भूमि जन्म न्यास, अयोध्या-वृंदावन

लोगों में आज भी गलत भ्रांतियां हैं कि ब्रह्माकुमारी सनातन विरोधी कार्य कर रही हैं। मैंने इस ज्ञान को समझा है और संस्था को जाना है। मैं कह सकता हूं ब्रह्माकुमारी सनातन को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। यहां गीता ज्ञान दिया जाता है। परमात्मा से जोड़ने की शिक्षा दी जा रही है।

महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज
श्रीपंचायती उदासीन नया अखाड़ा, पटौदी, हरियाणा

आज ब्रह्माकुमार भाई-बहनों द्वारा गीता का पैगाम भारत के कोने-कोने में समुद्र पार भी पहुंचाया जा रहा है। हमारा ये कदम स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ने वाला है। दुनिया के सारे लोग आबू के बाबू के काबू में आ जाएं तो सारी धरती जन्नत बन जाएगी।

परमात्मा कहते हैं, हे!

आत्माओं... काम महाशत्रु है

अब मैं कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं

महामंडलेश्वर स्वामी दिनेशानन्द भारती महाराज
रुड़की, उत्तराखंड

जन्म और मृत्यु के बीच जो है वह जीवन है। यही वेद, मनीषी और ब्रह्माकुमारी में सिखाया जाता है कि मैं कौन हूं। मेरा असली परिचय क्या है। मुझे जानना है तो सबसे पहले यह जानना होगा कि मैं आया कहां से हूं। ब्रह्मा बाबा ने यही संदेश दिया कि हम सभी आत्माएं हैं। सभी एक परमपिता शिव परमात्मा की संतान हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी स्वतन्त्रानन्द गिरी
ऋषिकेश, उत्तराखंड

इतने संत-महात्मा होने के बाद भी सनातन धर्म कितना बिखरा हुआ है। सभी को एक होना पड़ेगा। ब्रह्माकुमारी ऐसी संस्था है जहां किसी से कोई धर्म, संप्रदाय, जाति नहीं पूछी जाती है। गीता ही भगवान का गीत है, जिससे ही सभी के अंदर ज्ञान निकला है। ये बहनें ज्ञान से लोगों को आपस में जोड़ रही हैं।

महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज, सहारनपुर, उप्र

परमात्मा एक शक्ति है, एक ऊर्जा है। वह जब इस धरती पर आए तो ब्रह्मा तन का आधार लेकर सृजन का कार्य किया। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ में सीखा है कि यहां कुछ त्यागना है तो बुराई को त्याग कर जाओ। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी श्वेत वस्त्रों में संत हैं। प्रेम क्या होता है वह यहां आकर सीख सकते हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी अखलानन्द अक्रिय महाराज
हरिद्वार

ब्रह्माकुमारीज़ के जो सानिध्य और संपर्क में आता है तो उसका जीवन पूरी तरह बदल जाता है। व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता आ जाती है। यहां जीव को उसका मूल बताने का प्रयास किया जा रहा है। हमारा सनातन धर्म प्रश्न और उत्तर को लेकर है। जब तक जीवन में प्रश्न नहीं होगा तो समाधान नहीं मिल सकता है।

शिव आमंत्रण, आबूरोड

संकट की वेला में द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान उसका चीर बढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो एक द्रौपदी और एक दुर्योधन का वर्णन किया गया है। लेकिन वर्तमान स्थिति में देखा जाए तो यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगमयुग की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि 'हे आत्माओं! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है जो आदि-मध्य-अन्त दु:ख देने वाली है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित बन गई है, जहां घर-घर में काम कटारी चलती है। काम- विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है, अब मैं इस कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएं ही जन्म ले सकेंगी।

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे, वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अतः अब मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि सारे कल्प के अपने इस अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मानकर पवित्रता के बंधन में बंधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं उन्हीं की मन-वचन-कर्म से, काम विकार से रक्षा के लिए परमात्मा शिव उन्हें रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बंधवाते हैं जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने की प्रतिज्ञा का प्रतीक है। इस प्रकार इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। वर्तमान में यह वही समय चल रहा है।

द्वापरयुग से देवी-देवता चले जाते हैं वाम मार्ग में...

पुराणों में रक्षाबंधन को लेकर यही उल्लेख है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उन्होंने इन्द्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और उन्होंने कहा था इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएंगे। यहां प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति, कैसे होती है? यह त्योहार विष तोड़क पर्व, पुण्य प्रदायक पर्व आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देता है।

अतः यदि हम ऐसा बंधन बांधे तो निश्चय ही उपर्युक्त प्राप्ति हो सकती है। वास्तव में उपर्युक्त सभी बातों का आध्यात्मिक अर्थ है। यह अर्थ सारे कल्प की कहानी जानने से समझ में आता है। सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे देवी-देवता कहलाती थीं। द्वापरयुग से लेकर वही देवी-देवता वाम मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन, सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अतः जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगी और यम के दंड से भी छूट जाएंगी और मुक्ति भी प्राप्त करेंगी।

शिव शक्तियां कराती हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा का पावन कर्तव्य

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रचकर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियां बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन बांध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्तव्य चलता है। ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बांधने की प्रथा भी प्रचलित है। पुराने समय में ब्राह्मण ब्रह्मचर्य सहित सभी नियमों का पालन करते थे इसलिए वह इसके योग्य थे। ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियां ही वह सच्ची बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बंधन में बांधने की अलौकिक सेवा करती हैं। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि सभी मनुष्य-आत्माएं एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन हैं।

यह त्योहार कब और कैसे शुरू हुआ?

ऊपर जो कल्प की कहानी बताई गई है, उससे इस प्रश्न का समाधान मिल जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख द्वारा जिन नर-नारियों ने वास्तविक ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करके विकारों रूपी विष को तोड़ा था और स्वयं को पुण्यात्मा बनाया था, उन सच्चे ब्राह्मणों अथवा सच्चे ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने जन-जन को पवित्रता का प्रतीक यह रक्षाबंधन बांधा। जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सीखकर उस बंधन को निभाया, उन्होंने मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त की। अतः इस बंधन को आज तक भी मनाया जाता है और आज ब्राह्मण और बहनें यह बंधन बांधते हैं।

पवित्रता की राखी

सन्यासियों ने तो नारी को नर्क का द्वार कहकर अपवित्रता का सारा दोष नारी पर ही लगा दिया है। परन्तु वास्तव में नर और नारी दोनों ही पतित और विकारी बनते हैं। प्रायः नारियों की भेंट में नर ही अधिक कामी होते हैं। द्रौपदी की तरह कोई पुरुष अपनी लाज की रक्षा के लिए परमात्मा को नहीं पुकारते हैं। काम विकार के लिए प्रस्ताव भी प्रायः पुरुष ही करते हैं। कलियुग के अन्त के समय का पतित समाज भी पुरुष प्रधान होता है। अतः जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि भाइयों के पवित्र बनने से ही बहनों की लाज बच सकती है। अतः परमपिता शिव परमात्मा पुरुषों को ही रक्षाबंधन बंधवा कर उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाते हैं। इसीलिए भाइयों को बहनों द्वारा राखी बांधने की प्रथा चली आती है।

मुक्ति जीवनमुक्ति की प्राप्ति

रक्षाबंधन बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाए तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसका भाव यही है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मनुष्यों को यह बंधन बांधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें।

काल के पंजे से रक्षा

काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें कालों का काल महाकाल, महाकालेश्वर, अमरनाथ, प्राणनाथ कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की शरण में जाने की कामना करते हैं। परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा में कहा जाता है-जाखो राखे साइयां, मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

1937
में संस्था की शुरुआत

140
देशों में सेवाकेंद्र संचालित

06
हजार सेवाकेंद्र देश-विदेश में संचालित

50
हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

25
लाख नियमित विद्यार्थी

02
लाख बालब्रह्मचारी युवा सदस्य

1970
में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

07
पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से दिए

25
प्रभागों के माध्यम से समाज के सभी वर्ग की सेवा

नारी शक्ति ने उठाया विश्व बदलाव का बीड़ा

ब्रह्माकुमारीज़
सेवा, साधना और समर्पण के 90 वर्ष

शिव आमंत्रण, आबूरोड

वर्ष 1936 में अध्यात्म की एक ज्योति प्रज्वलित हुई, जिसके दिव्य प्रकाश, आभा, सकारात्मक और पवित्र ऊर्जा ने संकल्प से सिद्धी की महान यात्रा को साकार किया। उस ज्योति का स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का संकल्प आज सामाजिक परिवर्तन का केंद्रबिंदु बनकर समूचे विश्व को दिव्य ज्ञान की रोशनी से प्रकाशित कर कर रहा है। यह ज्योति थी ब्रह्माकुमारीज की स्थापना, जिनके प्रेरणास्रोत थे दादी लेखराज, जिन्हें प्यार से सभी ब्रह्मा बाबा के नाम से जानते हैं। अपनी 90 वर्ष की यात्रा में ब्रह्माकुमारीज ने आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग की शक्ति, सेवा साधना और उच्च चारित्रिक मूल्यों के बल पर लाखों लोगों के जीवन को प्रकाशमय किया है। सेवा की इस तपस्थली में हजारों लोग समर्पित भाव से विश्व शांति के स्वप्न को साकार करने में तपस्यारत हैं।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के विचार से विश्व में आई क्रांति

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती है। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामर्थ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। परमात्मा से महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा और एकमात्र संगठन है। यहां मुख्य प्रशासिका से लेकर प्रमुख पदों पर महिलाएं ही हैं। संगठन की सारी जिम्मेदारियां बहनें संभालती हैं और भाई उनके सहयोगी के रूप में साथ निभाते हैं।

संस्था की सामाजिक सेवाएं...

ब्रह्माकुमारीज 90 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रही है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में मूल्य शिक्षा, राजयोग थॉट लैब, श्रीडी हार्टकेयर, रिवर्स डायबिटीज, नशामुक्त भारत अभियान, विहासा- वैल्यु इन हेल्थकेयर, रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन, दिव्यांग सेवा गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। इनके माध्यम से समाज के सभी वर्गों को व्यापक स्तर पर लाभ मिल रहा है।

चौथी पास से लेकर पीएचडी बहनें

राजयोग ध्यान का ही कमाल है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका. राजयोगिनी दादी जानकी जो मात्र चौथी कक्षा तक पढ़ीं थी लेकिन 60 वर्ष की उम्र में वह विदेशी सरजमीं पर पहुंचीं। 90 साल की उम्र तक उन्होंने अकेले 100 से अधिक देशों में भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का परचम लहराया। अनेक ऐसी बहनें हैं जो आठवीं कक्षा से कम पढ़ी-लिखीं हैं लेकिन जब वह मंच राजयोग की शक्ति संबोधन देती हैं तो लोग दंग रह जाते हैं। कई बहनें डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट, वकील, प्रोफेसर, से लेकर सिंगर तक हैं जिन्होंने बाकायदा प्रोफेशनल डिग्री लेने के बाद आध्यात्म की राह अपनाई है।

शांति पदक से सम्मानित

यूएनओ की ओर से ब्रह्माकुमारीज को वर्ष 1981 और वर्ष 1986 में संयुक्त राष्ट्र शांतिदूत पुरस्कार मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को प्रदान किया गया। वहीं 1987 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति संदेशवाहक पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी वर्ष पांच राष्ट्रीय शांति संदेशवाहक पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा भी कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल

ब्रह्माकुमारीज द्वारा युवाओं को नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता की शिक्षा देने के लिए देश के 36 विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू करके मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता के डिप्लोमा व डिग्री कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। इंजीनियरिंग कॉलेजों के साथ ऑनलाइन कोर्स शुरू करने के लिए एमओयू हुआ। विद्यार्थी भी मेडिटेशन सीखने के लिए आगे आ रहे हैं।

विश्व को सुंदर, सुरक्षित संस्कारवान परिवार बनाने में अपना योगदान दें

रक्षाबंधन हमें केवल एक पारिवारिक परंपरा का स्मरण नहीं कराता, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के अटूट, पवित्र और प्रेममय संबंध का दिव्य उत्सव है। परमपिता शिव, जो समस्त आत्माओं के सनातन रक्षक हैं, उनके साथ राजयोग का संबंध ही जीवन की सबसे सुरक्षित रक्षा-सूत्र है। यह सूत्र हमें भय, तनाव, क्रोध, असुरक्षा और नकारात्मकता से मुक्त कर आत्मबल, शांति और दिव्य शक्तियों से संपन्न बनाता है। आइए, इस रक्षाबंधन पर हम केवल रक्षा-सूत्र ही न बाँधें, बल्कि एक-दूसरे की गरिमा, विश्वास और मानवीय मूल्यों की रक्षा का संकल्प भी लें। अपने परिवार, समाज और राष्ट्र में प्रेम, सहयोग और आध्यात्मिक चेतना का वातावरण बनाकर विश्व को एक सुंदर, सुरक्षित और संस्कारवान परिवार बनाने में अपना योगदान दें।

राजयोगिनी जयंती दीदी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

रक्षाबंधन का पावन पर्व केवल भाई-बहन के स्नेह का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मा और परमपिता परमात्मा के अटूट, पवित्र और दिव्य संबंध का भी स्मरण कराता है। आज के समय में जब मनुष्य अनेक प्रकार की मानसिक अशांति, भय, तनाव और नकारात्मकताओं से घिरा हुआ है, तब परमात्मा शिव द्वारा बंधा ज्ञान, योग और पवित्रता का रक्षासूत्र ही जीवन की वास्तविक सुरक्षा का आधार बनता है। परमात्मा हमें स्मरण कराते हैं कि सच्ची रक्षा बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आत्मिक जागृति, श्रेष्ठ संस्कारों और ईश्वरीय स्मृति से होती है। जब हम राजयोग के माध्यम से स्वयं को आत्मा और परमात्मा को अपना पिता अनुभव करते हैं, तब मन में शांति, बुद्धि में स्पष्टता और जीवन में शक्ति का संचार होता है। यही आध्यात्मिक शक्ति हमें विकारों, तनाव और नकारात्मक प्रवृत्तियों से सुरक्षित रखती है। आइए, इस रक्षाबंधन पर हम केवल एक-दूसरे की कलाई पर रक्षा सूत्र ही न बाँधें, बल्कि अपने जीवन में पवित्रता, प्रेम, मर्यादा, करुणा और श्रेष्ठ संकल्पों का भी सूत्र धारण करें।

राजयोगिनी मुन्नी दीदी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः ब्र.कु. कोमल » संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र

ब्रह्माकुमारीज़ का नशामुक्त भारत अभियान सराहनीय है : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

30775
कार्यक्रम तीन साल में आयोजित

3.61
करोड़ लोगों को दिलाया नशामुक्ति का संकल्प

50
हजार पाठशालाओं में हुए कार्यक्रम

02
लाख वालेंटियर भाई-बहनें अभियान से जुड़े

02
हजार डॉक्टर, नर्स ने दी नि:शुल्क सेवा

ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय एवं नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के साथ चलाया जा रहा है देशव्यापी नशामुक्त भारत अभियान

शिव आमंत्रण, आबूरोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल विंग द्वारा चलाए जा रहे नशामुक्त भारत अभियान की सफलता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने संस्थान को शुभकामना संदेश भेजकर कहा कि मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ब्रह्माकुमारीज़ नशा मुक्त भारत अभियान के समर्थन में एक राष्ट्रव्यापी जन-आंदोलन का आयोजन कर रही हैं। इस सार्थक पहल के लिए मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा 'नशा मुक्त भारत' के निर्माण के हमारे सामूहिक संकल्प को सुदृढ़ करना है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे लिखा कि जब भारत 'विकसित भारत' के लक्ष्य की ओर आत्मविश्वास के साथ अग्रसर है, तब हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी युवा पीढ़ी की ऊर्जा, प्रतिभा और आकांक्षाएं हैं। नशे की गिरफ्त से मुक्त प्रत्येक युवा नवाचार, उद्यमिता और सेवा के माध्यम से राष्ट्र की प्रगति में अपना पूर्ण योगदान दे सकता है। इसलिए युवाओं को इस बुराई से दूर रखना केवल सामाजिक जिम्मेदारी ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कर्तव्य भी है।

इसके अतिरिक्त, नशाखोरी की चुनौती केवल किसी एक व्यक्ति के जीवन तक सीमित नहीं है। यह परिवारों को कमजोर करती है, सामाजिक समरसता को क्षति पहुंचाती है और राष्ट्र को उसकी युवा शक्ति की अपार संभावनाओं से वंचित कर देती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा है कि ऐसे में यह हर्ष का विषय है कि ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक जागरूकता, मूल्य-आधारित शिक्षा, राजयोग ध्यान तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से देशभर के विद्यालयों, महाविद्यालयों, गांवों और विभिन्न समुदायों तक यह संदेश पहुंचा रही है। इस प्रकार के प्रयास नशा मुक्ति के राष्ट्रीय अभियान को सशक्त बनाते हैं, क्योंकि वे लोगों को सकारात्मक जीवन-निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं। यह 'जनभागीदारी' की सच्ची भावना को भी प्रतिबिंबित करता है, जिसमें समाज का प्रत्येक वर्ग एक स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय सहभागी बनता है। मेरी कामना है कि यह जन-आंदोलन नशा मुक्त भारत के निर्माण के हमारे सामूहिक संकल्प को और अधिक मजबूत करे तथा विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में सहायक बने।

तीन साल में देशभर में 30775 कार्यक्रम

मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल ने बताया कि देशभर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तीन साल में 30775 कार्यक्रम के माध्यम से 3.61 करोड़ लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया गया। इसमें दो लाख से अधिक भाई-बहनों और दो हजार डॉक्टर्स ने वालेंटियर के रूप में सेवाएं दीं। मेडिकल विंग पिछले 45 साल से स्वस्थ भारत के संकल्प के साथ सेवाओं में जुटा है। देश के 28 राज्यों और पांच केंद्र शासित प्रदेशों में अभियान चलाया जा रहा है। अब तक 19102 शहर और 11673 गांवों को कवर किया गया है। वहीं 9915 स्कूल और कॉलेजों में नशामुक्ति जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान ने मेरे जीवन को नई दिशा दी है: अभिनेत्री शर्मा

शिव आमंत्रण, आबूराज

ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर में 18 से 22 जून 2026 तक संस्कार परिवर्तन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण विषय पर राजयोग शिविर एवं राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। देशभर से आई महिलाओं, शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लेकर आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर विचार-विमर्श किया।

इंडो-यूरोपियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री भोपाल की अध्यक्षा अनुराधा सिंघई ने कहा कि वास्तविक परिवर्तन राजनीति, धन या सत्ता से नहीं, बल्कि संस्कारों से आता है। मनुष्य की सबसे बड़ी अदालत उसका अपना अंत:करण है, जहां सत्य ही स्वीकार होता है। धैर्य और क्षमा जैसे संस्कार व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाते हैं। मुंबई से पधारीं फिल्म अभिनेत्री शशि शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ने उनके जीवन को नई दिशा दी है। प्रत्येक महिला में दुर्गा, सीता और द्रौपदी जैसी शक्तियां विद्यमान हैं, जिन्हें जागृत कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली की कानूनी सलाहकार शिप्रा राय ने कहा कि सशक्त महिला वही है, जिसका अपने विचारों, शब्दों और कर्मों पर पूर्ण नियंत्रण हो। दृष्टि फाउंडेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद के संस्थापक दिनेश कुमार गौतम ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उनके जीवन को मां, पत्नी और बेटी ने संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इसलिए महिला सम्मान ही समाज के विकास का आधार है।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीक. चक्रधारी दीदी ने कहा कि केवल शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार देना भी आवश्यक है। परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना का दायित्व महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका से जुड़ा है। जब महिला प्रसन्न एवं संतुष्ट होती है तो पूरा परिवार स्वस्थ एवं सुखद वातावरण का अनुभव करता है। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके शारदा दीदी, ज्ञान सरोवर की निदेशिका बीके प्रभा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. बीके सविता दीदी ने किया।

विधि एवं न्याय विभाग का दो दिनी रिफॉर्म्स उत्सव एवं चिंतन शिविर आयोजित

जीवन में कोई परेशानी आए तो चिंता की जगह समाधान पर चिंतन करें: केंद्रीय कानून मंत्री

शिव आमंत्रण, आबूराज, राजस्थान

भारत सरकार के कानून एवं विधि न्याय मंत्रालय के तत्वावधान में ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर, में दो दिवसीय रिफॉर्म्स उत्सव एवं चिंतन शिविर आयोजित किया गया। शिविर में पिछले 12 सालों में विभाग द्वारा कानूनों में किए गए सुधारों पर विचार मंथन किया गया।

शिविर में केंद्रीय कानून एवं विधि न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि जीवन में कोई परेशानी आए तो चिंता की जगह चिंतन पर जोर दे। समय समय पर विभाग स्तर पर हर काम की समीक्षा करते रहे कि इसे और अच्छे तरीके से कैसे किया जा सकता है। चिंतन शिविर का मतलब होता है कि अपने पूर्व में किए गए कार्यों की समीक्षा करना, ताकि एक बार हुई गलती दोबारा न हो। भारत के रिफॉर्म के लिए अमृत काल का समय सही समय है। यही समय भारत का अनमोल समय है। भारत को विकसित भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ना है।

उन्होंने कहा कि एआई एक चुनौती जरूर है, लेकिन ह्यूमन बीइंग का रिप्लेसमेंट कोई नहीं कर सकेगा। मानव मष्तिक का दुनिया में दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हमारी सोच में बदलाव कैसे लाएं यह चिंतन का विषय है। हर किसी के मन में निगेटिव विचार आते हैं, लेकिन मन को मजबूत रखो तो नेगेटिव विचार निकल जाते हैं। सात्विक प्रवृत्ति के साथ मन को जोड़ लिया तो जीवन में बदलाव आएगा। केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना करते हुए कहा कि यहां हजारों भाई-बहनों के पॉजीटिव बाइब्रेशन, पॉजीटिव थॉट्स का ही कमाल है कि जो इस ऐरा में आता है उसे यहां की सकारात्मक ऊर्जा महसूस होती है। शांति महसूस होती है। यहां सुबह का मेडिटेशन सेशन में जो बातें बताईं गईं उन्हें जीवन में उतारेंगे तो प्रैक्टिकल जीवन में काम आएगा। सदा अच्छे विचार करें। जैसा विचार रखेंगे, वैसा ही जीवन में होगा। घर में भी पॉजीटिव माहौल बनाकर रखें। विधि सचिव एवं सचिव विधायी विभाग विधि एवं न्याय मंत्रालय डॉ. राजीव मणि त्रिपाठी और विधि एवं न्याय विभाग के एडिशनल सेक्रेट्री डॉ. मनोज कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी प्रतिभागियों का अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने केंद्रीय मंत्री और सभी अधिकारियों का मोमेंटो देकर और शॉल पहनाकर स्वागत, सम्मान किया।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि संस्थान का उद्देश्य है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। जब तक हम स्वयं के जीवन में बदलाव नहीं लाएंगे तब तक दुनिया में बदलाव नहीं ला सकते हैं। इसी संकल्प के साथ ब्रह्माकुमारीज़ पिछले 90 साल से सामाजिक बदलाव और विश्व शांति के लिए समर्पित रूप से सेवाएं कर रही हैं।

संपादकीय

स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ- आत्मा की विकारों से मुक्ति

भारत का स्वतंत्रता दिवस केवल राजनीतिक आज़ादी का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमें स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ पर भी विचार करने की प्रेरणा देता है। 15 अगस्त 1947 को देश विदेशी दासता से मुक्त हुआ, किंतु आज भी मनुष्य अनेक प्रकार की आंतरिक पराधीनताओं से जकड़ा हुआ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और तनाव जैसी मानसिक दुर्बलताएँ उसके सुख, शांति और स्वतंत्रता को निरंतर चुनौती दे रही हैं। ऐसे समय में ब्रह्माकुमारीज़ का आध्यात्मिक ज्ञान हमें बताता है कि सच्ची स्वतंत्रता बाहरी नहीं, बल्कि आत्मा की आंतरिक मुक्ति है। परमपिता शिव हमें स्मरण कराते हैं कि हम शरीर नहीं, बल्कि शुद्ध, पवित्र और ज्योतिबिंदु स्वरूप आत्माएँ हैं। जब मनुष्य देह-अभिमान से ऊपर उठकर आत्म-अभिमान में स्थित होता है, तभी उसके जीवन में वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव होता है। आत्मचेतना का यह अभ्यास नकारात्मक संस्कारों और विकारों की बेड़ियों को तोड़कर मन, बुद्धि और संस्कारों को दिव्य गुणों से भर देता है। आज विश्व अनेक संकटों से घिरा हुआ है। हिंसा, आतंक, पर्यावरण असंतुलन, पारिवारिक विघटन और नैतिक मूल्यों का ह्रास इस बात का संकेत है कि केवल भौतिक विकास से मानवता सुरक्षित नहीं हो सकती। आवश्यकता है आध्यात्मिक जागृति की। राजयोग ध्यान मनुष्य को परमात्मा शिव से जोड़कर आत्मिक शक्ति प्रदान करता है। यह शक्ति व्यक्ति को परिस्थितियों का दास नहीं, बल्कि उनका स्वामी बनाती है। यही आंतरिक स्वतंत्रता जीवन में शांति, प्रेम और आनंद का आधार बनती है। स्वतंत्रता दिवस हमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का भी स्मरण कराता है। यदि प्रत्येक नागरिक स्वयं को श्रेष्ठ संस्कारों से संपन्न बनाए, सत्य, ईमानदारी, सहनशीलता और करुणा को जीवन में धारण करे, तो राष्ट्र स्वतः सशक्त और समृद्ध बनेगा।

बोध कथा/जीवन की सीख

प्रभु का ध्यान

एक अमीर व्यापारी थे, जिनका नाम सुखीलाल था। सुखीलाल सुबह उठकर स्नान करने के बाद नियमित प्रभु का ध्यान भजन करते थे। फिर समय पर दुकान खोल कर बैठ जाते थे। उनकी ईमानदारी के चर्चे चारों तरफ थे। जब उनके बच्चे जवान हो गए तो उन्होंने पिताजी का काम संभाल लिया। सुखीलाल मन ही मन सोचने लगे कि अब 60 वर्ष की आयु हो गई है, ऐसे में दुकान का लालच छोड़कर क्यों नहीं पूरा समय ईश्वर के ध्यान और जन सेवा में लगाया जाए। लेकिन उनका मन कहता, अभी तो नाती पोतों को पढ़ाना-लिखाना है। उनके विवाह करने हैं। इन सबसे निपट जाने के बाद ही दुकान छोड़ने के बारे में सोचना ठीक रहेगा।

इसी उधेड़बुन में वह एक दिन सुबह टहलने जा रहे थे। सड़क पर एक सफाई करने वाली महिला झाड़ू लगा रही थी। सुखीलालजी को सड़क पर चलते हुए देखकर महिला ने कहा- सेठजी आप एक तरफ हो जाइए। बीच में रहेंगे तो आपके ऊपर धूल पड़ जाएगी। एक तरफ हो जाएंगे तो धूल से बचे रहेंगे। महिला के इन शब्दों ने सेठजी की आंखें खोल दी। उन्हें भी महसूस होने लगा कि दो नावों में सवार होने वाले का कभी कल्याण नहीं होता है। उन्होंने तुरंत दुकान की चाबी अपने बेटों को सौंपते हुए कहा- मैंने इतने साल कमाने में बिता दिए हैं अब शेष जीवन कमाए हुए धन से लोगों की सेवा करना चाहता हूं और प्रभु का ध्यान-भजन करना चाहता हूं। यह सुनकर उनके बेटे को बुरा तो लगा, लेकिन परिवारजन ने सुखीलाल को सभी दायित्व से मुक्त कर दिया। कुछ ही दिन में सुखीलाल भक्ति और सेवा में डूब चुके थे।

संदेश : मनुष्य जन्म में संभावना है, आप जितना महान होना चाहें, जितना ऊंचा उठना चाहें उठ सकते हैं। जितना नीचे गिरना चाहें गिर भी सकते हैं। अपना जीवन ईश्वर के ज्ञान से, ध्यान से, सेवा से, परोपकार से, पुण्य कार्यों से जितना भरना चाहें उतना भर सकते हैं। पुण्यकर्म करके ऊंचा उठना यह मनुष्य जन्म का तप है। यह शरीर विषयभोग के लिए नहीं मिला। यह शरीर मिला है परमात्मा का सुख और शुद्ध आनंद लेने के लिए। अच्छे कृत्य करते-करते हृदय शुद्ध होता जाएगा। हृदय जितना शुद्ध होगा, उतना शांत रहेगा और जितना शांत रहेगा उतना शांतस्वरूप परमात्मा के करीब आ जाएगा। इसके लिए केवल परमात्मा से लगन और प्रेम की जरूरत है। बाकी काम तो भगवान कर देते हैं।

स्वतंत्रता के सानिध्य से मुखरित राष्ट्रीयता का धर्म

स्वतंत्रता दिवस विशेष-2026

शिव आमंत्रण, आबूरोड। स्वतंत्रता के सानिध्य से मुखरित राष्ट्रीयता के नैसर्गिक धर्म ने ईमानदारी और पवित्रता को अन्तःकरण की ध्वनि के रूप में स्वीकार करने की शक्ति प्रदान कर दी है, जो मेरे विशाल हृदय में सबलता के साथ राष्ट्रीय अपेक्षाओं को पूर्ण करने में दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ सदा के लिये स्थिर हो जाएगी। इस सत्य की स्वीकारोक्ति के पश्चात् कि ईमानदारी से परिपूर्ण पवित्र मनुष्य आत्मा उच्च कोटि के चरित्र की गरिमा का श्रेष्ठतम प्रतीक और उज्जवल प्रतिबिंब है और उसे स्वतंत्रता का सानिध्य भी प्राप्त है तो यह पूर्णतया मान लिया जाना चाहिये कि वह राष्ट्रीय चरित्र की मूल भावना से न केवल परिचित अपितु जीवन संग्राम में भी सम्पूर्ण पारदर्शिता को आत्मसात् कर चुका होगा।

राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में स्वयं की महत्वपूर्ण भूमिका: स्वयं के मूल्यांकन के संदर्भित प्रसंग में अन्तःकरण की ध्वनि के प्रति सजग मानवीय वृत्ति कहीं न कहीं से यह अवबोध, व्यक्ति को अवश्य करा देती होगी कि आखिर राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में स्वयं की अति महत्वपूर्ण संवेदनशील भूमिका क्या है? क्योंकि यक्ष प्रश्नों से बेखबर मन के लिये यही सर्वाधिक उपयुक्त खुराक भी है। मानसिक संकीर्णता से युक्त विविध व्यथित हृदयों की दास्तान सुनने का अर्थ यह हो जाना चाहिये कि हमारी समझ का विकसित स्वरूप गुलामी से मुक्त अभी नहीं हुआ है और यदि ऐसी ही अनुभूति के मध्य अपनी उपस्थिति को हमने दर्ज करा भी रखा है तो कम से कम आज स्वाधीनता की शक्ति सम्पन्नता के पावन अवसर पर इस व्याधि से मुक्त होने का दृढ़ संकल्प करना, स्वयं के जीवन का अति महत्वपूर्ण कार्य है जिसे किसी भी स्थिति में संपूर्णता के स्वरूप तक पहुंचाना आवश्यक है।

राष्ट्रीयता का नैतिक धर्म निभाने में सजगतापूर्ण दृष्टिकोण: स्वतंत्रता के सानिध्य से मुखरित राष्ट्रीयता का धर्म निभाने के प्रति अनजान बनने की विवशताएं, जब हमारे अस्तित्व को ही संपूर्ण रूप से नेस्तनाबूत कर देगीं, उस समय क्या हम इस काबिल रह पाएंगे कि राष्ट्राद्रोह का पश्चाताप भी कर सकें? राष्ट्रीय अपेक्षाओं पर कुठाराघात करने की परिणीति जब हमें स्वयं की नजरों से ही बेदखल कर देगी, तब अभिशप्त मानव जाति का बोझ क्या यह 'पवित्र राष्ट्र' और उसका उज्जवल चरित्र वास्तविक स्वरूप में क्या सहन कर पायेगा? केवल दृढ़ प्रतिज्ञा के आत्मबल को जीवन में धारण करके ही जीवन की व्यवहारिक स्थितियों में क्रियान्वयन की अनुभूति के साथ परिवर्तन के अंतर्द्वंद से मुक्त होकर ही राष्ट्रीयता के पथ का अनुगमन किया जा सकता है। सत्य के प्रति संवेदनशीलता का समावेश कहीं न कहीं हमारे व्यवहार में झलकता रहे, इसकी तमाम कोशिशें मानव जाति के द्वारा की जाती हैं परन्तु वास्तविकता के मुखर होने पर 'लोमहर्षक घटनाओं ' का खुलासा कहीं से कहीं तक भी व्यक्ति और उसके कृत्य को जोड़ने में सहायक नहीं हो पाता है।

झंडा ऊंचा रहे हमारा का उत्तरदायित्वपूर्ण गरिमामयी उद्घोष: जीवन के विशाल प्रांगण में अन्तःकरण की ध्वनि को झुठलाने का खामियाजा भुगतने के बावजूद भी मन की आंखें यदि नम नहीं हों तो- 'झंडा ऊंचा रहे हमारा...' का उत्तरदायित्वपूर्ण उद्घोष भला क्यों? और किसके लिये हम कर रहे हैं? केवल नारेबाजी के साथ नगाड़े बजाने की परम्परा को टूटे हुये कंधों पर ढोने का नाटक, विरासत में मिली स्वतंत्रता को छलने का षड्यंत्र, हमारे द्वारा आखिर कब तक किया जाता रहेगा? स्वयं के चरित्र से खिलवाड़ करने की दीर्घकालीन प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने में विवश 'हम भारत के लोग क्या राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण की उज्जवलता की ओर, अपने लड़खड़ाते कदमों के साथ बढ़ सकेंगे? यक्ष प्रश्नों से बेखबर मन स्वतंत्रता के बोध को कुछ समय के लिये हृदय में संजोता तो है, लेकिन स्वार्थ की मलीनता के कारण स्वयं को अपनी इन्द्रियों का गुलाम समझ पुनः वह स्वछन्दता युक्त वातावरण में प्रवेश कर जाता है। राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में स्वयं की आहूति का दृढ़ चरित्र ही कर्त्तव्योन्मुखी भूमिका के निर्वहन का स्वप्न पूर्ण कर सकता है।

स्वतंत्रता के स्वर्णिम प्रकाश में आत्म जागृति का स्वरूप: मानवीय दृष्टिकोण के सबल पक्षों को समझ लेने के पश्चात् यह सहज ही ज्ञात हो जाता है कि जो लोग अभी तक मानसिक संकीर्णता की व्याधि से ग्रसित हैं और अपनी आत्मा को गिरवी रखकर गोरख धंधे में गुप्त रूप से लगे हुये हैं, उनकी सुप्त आत्मा को 'स्वतंत्रता के स्वर्णिम प्रकाश' के माध्यम से ही जागृत किया जा सकता है। इन व्यथित हृदयों की दास्तांन को निरंतर रूप से श्रवण करने के बजाय उन्हें संपूर्ण रूप से 'स्वाधीनता की शक्ति सम्पन्नता' से परिचित कराने की आज आवश्यकता है जिससे स्वयं के परिवर्तन के लिए आत्म जगत को सक्षम बनाया जा सके। किसी भी कीमत पर संकुचित दायरे की दुःखद एवं दोषारोपित करने वाली शैली को समर्थन देने की भूल करने का दुस्साहस ही व्यक्ति के विनाश का प्रायः कारक बन जाता है और 'राष्ट्रीय हितों' को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न स्थितियों के अंतर्गत क्षति पहुंचाते हुए आहत करता रहता है।

राष्ट्रीय चरित्र के गरिमामयी भावार्थ की यथार्थता का सानिध्य: राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु स्वतंत्र राष्ट्र द्वारा निरंतर रूप से की जाने वाली सात्विकता से युक्त सकारात्मक पहल और उन पर अमल करने की अपेक्षा का आशय यह लगाया जा सकता है कि शायद हम अभी तक स्वतंत्र हुये ही नहीं हैं

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 96

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

क्योंकि स्वतंत्रता की रक्षा में पूर्णतः सफल न हो पाने के कारण ही तो हम आज आंतरिक स्वरूप के अंतर्गत कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में घायल राष्ट्र का प्रतीक बन कर रह गये हैं। अपनी मनःस्थिति की सुदृढ़ता और उसमें उत्साह के संचार हेतु जब तक राष्ट्रीय चरित्र के गरिमामयी भावार्थ को यथार्थता के सानिध्य में हमारे द्वारा अपनी आत्मा में समाविष्ट करके उसे व्यावहारिक स्वरूप में जीवन की कर्म कहानी में प्रत्यारोपित नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्रीयता के प्रति हमारी आस्था संदिग्ध ही बनी रहेगी।

मानसिक गुलामी के दीर्घकालीन दौर से मुक्त होने की स्थितियां: स्वतंत्र राष्ट्र में रहते हुये जहां एक नागरिक बोध के कर्तव्यों से संबंधित समग्र विकास की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए श्रेष्ठ नागरिक की भूमिका निभाने के बजाये, राष्ट्र धर्म से विमुख हो जाने की विवशताएं क्या हमारे अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाती हैं? जहाँ पर केवल देशद्रोही का अपराध ही सिद्ध होता है। आखिर कब तक अपनी आत्मा की आवाज़ का खून करके 'बड़े भाग्य मानुस तन पावा..' के स्वर्णिम चरित्र को लज्जित कराने का घृणित खेल हमारे द्वारा जारी रहेगा? राष्ट्र रक्षा हेतु सुप्त संवेदनाओं की जागृति के लिये कितने? और स्वतंत्रता दिवसों की स्मृतियां चाहिये? जिससे कि मानसिक गुलामी के दीर्घकालीन दौर से मुक्त हुआ जा सकेगा? कर्तव्यों एवं दायित्वों का बोध कराने वाले आदर्श के सम्मुख नतमस्तक होने की प्रचलित शैली में राष्ट्रहित हेतु युगांतरकारी परिवर्तन करने की आज व्यवहारिक स्वरूप में आवश्यकता है।

त्याग और बलिदान को आत्मसात करने की व्यावहारिकता: राष्ट्र के लिए संपूर्ण समर्पित राष्ट्र के रक्षकों के प्रति नैसर्गिक स्वरूप में सम्मान का दृष्टिकोण अपनाते हुए उनके त्याग और बलिदान को व्यर्थ न जाने देने की दृढ़ता को आत्मसात करने की व्यावहारिक शैली को अपनाना होगा, तभी भविष्य के गर्भ में स्वयं का अस्तित्व संपूर्ण रूप से सुरक्षित और संरक्षित रह सकेगा। किसी भी स्तर पर जाकर जीवित रहने का विकृत स्वरूप अपना लेने की कौन सी बाध्यता किसी स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक के सामने आ जाती है कि वह राष्ट्र को अपमानित करने का दुस्साहस कर बैठता है? जीवन में अनजान बनने का ढोंग, मानव जाति को शर्मशार कर अपने अस्तित्व को ही कोसने पर आखिर क्यों विवश कर देता है? जिसकी परिणिति केवल विनाश है , क्योंकि इसमें आत्मीय पश्चाताप की तनिक भी गुंजाइश किसी भी स्थिति में नहीं होती है।

राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में साधन और साध्य की पवित्रता: राष्ट्रीय अपेक्षाओं पर खरा न उतरने का खामियाजा जब 'स्वयं की नज़रों में गिर जाने की भयावह स्थिति' के रूप में प्रकट होता है , तो यह अभिशाप झेलती पीढ़ी राष्ट्र के लिये एक अनावश्यक दायित्व बन कर रह जाती है । स्वतंत्र राष्ट्र में रहते हुये अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का बोध और उसे क्रियान्वित करने की पहल हेतु समर्पण की आवश्यकता क्या? आज भी समझने एवं समझाने की विषय वस्तु रह गयी है? राष्ट्रीय हितों का आदर्श ध्यान में रखते हुये विकासात्मक परिवेश और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में जब तक 'साधन और साध्य की पवित्रता' को अक्षुण्य रखते हुये व्यावहारिक प्रयास नहीं किये जाएंगे तब तक 'व्यथित लोक और कथित विकास' की व्यथा और उसकी कथा को हमारा राष्ट्र सहता रहेगा। हम क्या थे? और क्या हैं? इसका स्पष्टीकरण देने की आज आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि कथनी एवं करनी के दीर्घ अन्तराल ने पारदर्शिता के इस युग में सब कुछ स्पष्ट कर दिया है ।

वीर राष्ट्र 'भारत भूमि' द्वारा क्षमा रूप आभूषण का प्रयोग : विश्वास का इतिहास इस बात का मुख्य गवाह है कि राष्ट्रीय अपेक्षाओं के साथ किस तरह उपेक्षाओं का कुठाराघात किया गया तथा पवित्र राष्ट्र और उसके उज्जवल चरित्र ने इस दंश की पीड़ा को किस प्रकार झेला है इसके प्रमाणीकरण की आवश्यकता अब नहीं रह गई है। एक वीर राष्ट्र के स्वरूप में भारत भूमि द्वारा 'क्षमा' को अपना आभूषण स्वीकार करते हुए 'दानवीय एवं मानवीय संस्कृति के मध्य आखिर कब तक संतुलन स्थापित रख सकेगा? क्योंकि भारतीय संस्कृति का अतीत जब 'सर्वे भवन्तु सुखिनः..' के उद्घोष को सम्पूर्ण जगत के सम्मुख प्रकट करता है तब विश्व की समस्त मानवता यह प्रश्न करती है कि सर्व धर्म समभाव...' के साथ बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के स्वप्न को धरा पर स्थापित करने का व्यवहार ही जब क्रियान्वित नहीं हो सका तो कैसे? इस राष्ट्र के लोगों अर्थात जनमानस के द्वारा यह अपेक्षा की जा सकती है कि उनके द्वारा वसुधैव कुटुम्बकम्... के समग्र वटवृक्ष की भांति विशालतम एवं विराटतम सिद्धांत को स्वीकार करके व्यावहारिक जगत में अंतर्मन से आत्मसात् करके उसे क्रियान्वित भी किया जा सकेगा? जय हिंद! भारत माता की जय...।

संकल्प शक्ति से बदलाव की नई कहानी लिख रहे युवा

युवा रिसर्चर बनें, तपस्या में है हर समस्या का हल

2023 में जीवन में बड़ी आपदा आई, संकल्प शक्ति, हीलिंग पावर और परमात्म मदद से बाहर आया

युवा शक्ति
अध्यात्म पथ पर युवाओं के बढ़ते कदम

शिव आमंत्रण, आबूरोड

मेरे जीवन में वर्ष 2023 काल बनकर आया। तन और मन से टूट गया था। कहीं से कोई आराम नहीं मिल रहा था। किसी ने बताया कि ईविल सोल का प्रभाव है। जब सब जगह से आस टूट गई तो मैंने स्वयं ही स्वयं को हीलिंग करने का संकल्प किया। इस विकट आपदा में सबसे ज्यादा सहारा ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन से मिला। रोज घंटों राजयोग ध्यान साधना और हीलिंग पावर टेक्निक की। इसी का कमाल रहा कि कुछ ही महीनों में शारीरिक और मानसिक व्याधि से बाहर निकल आया। इसके बाद मैंने हीलिंग पावर में यूके रिकगनाइज सर्टिफिकेट और आईपीएचएम सर्टिफिकेट लिया। हीलिंग पावर टेक्निक सीखने का फायदा अब स्वयं के साथ दूसरों की मदद करने में भी मिल रहा है। दूसरों की सेवा करके स्वयं को आत्मिक खुशी और संतुष्टि की अनुभूति होती है।

यह कहना है माउंट आबू स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की कैंटीन में सेवा कर रहे बीके शिव संदेश भाई (33) का। गुब्बी जिला तुमकुर, कर्नाटक में जन्मे शिव संदेश भाई ने एमकॉम की शिक्षा प्राप्त की है। आपके एक लौकिक भाई भी मुख्यालय शांतिवन के एकाउंट डिमार्टमेंट में समर्पित रूप से सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आप पिछले छह वर्ष से हॉस्पिटल में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में आपने अपने जीवन से जुड़े अनेक अनछुए पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही हीलिंग पावर का महत्व बताया।

शिव संदेश भाई ने बताया कि बचपन में ही ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आ गया था। मेरी माता जी बताती थीं कि मैं जब बचपन में रोता था और जैसे ही बाबा रुम में बिठाते थे तो रोना बंद हो जाता था। साथ ही मुझे ड्राइंग बनाने और सेवा करने का शौक रहा।

राजयोग मेडिटेशन में सबसे बड़ी हीलिंग पावर है। इससे न केवल आप स्वयं को हर तरह की बीमारी में हील कर सकते हैं बल्कि दूसरों की भी मदद कर सकते हैं। मेरे पास डिप्रेशन से जुड़े अनेक केस आते हैं, उनमें एक बात कॉमन रहती है कि लोग जीवन की बुरी यादों को भूल नहीं पाते हैं और वह डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। यदि वर्तमान को आनंद के साथ जीना है तो वर्तमान में ही रहना होगा। इसका आनंद लेना होगा। काउंसलिंग, मोटिवेशन और हीलिंग पावर से लोगों को दर्द से दूर करने पर मुझे आत्मिक संतुष्टि मिलती है।

परमात्मा की अनुभूति तभी संभव है, जब उनकी फ्रीक्वेंसी मैच करेंगे

शिव संदेश भाई ने कहा कि भगवान गीता में किए अपने वायदे अनुसार इस धरा पर आ चुके हैं। परमात्मा की अनुभूति तभी संभव है, जब उनकी फ्रीक्वेंसी को मैच करेंगे।

युवा सदा स्वयं को खोजते रहें। हर एक युवा रिसर्चर बने। क्योंकि हम जीवन में जितना रिसर्च करते जाएंगे, उतने अनुभव बढ़ते जाएंगे। जब हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगा। मैं बचपन से ही एक ही स्वमान- मैं परम पवित्र आत्मा हूं.... में रहता हूं। तपस्या में हर समस्या का हल है। दुनिया की हर समस्या का समाधान सहनशीलता और शांति में है। पवित्रता के बल से ही भारत आगे बढ़ेगा और विश्वगुरु बनेगा। परमात्मा की यही पुकार है कि यह मौका जन्मोंजन्म का भाग्य बनाने का है। हर मनुष्य आत्मा ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे इस सत्य ज्ञान को पहचाने और अपना जीवन धन्य-धन्य बनाए।

स्प्रीचुअल काउंसर और हीलर

बता दें कि शिव संदेश भाई पिछले नौ वर्ष से स्प्रीचुअल काउंसर के रूप में सेवा प्रदान कर रहे हैं। आपने स्प्रीचुअल ज्ञान के माध्यम से अब तक सैकड़ों लोगों को जीवन में नई राह दिखाई है। पिछले चार वर्ष से हीलिंग पावर के माध्यम से लोगों को पुरानी बीमारी, दुख, दर्द, तनाव, डिप्रेशन से बाहर निकालने की सेवा में जुटे हैं। आपने रैकी ग्रैंड मास्टर, आकाशिक रिकार्ड कीवर, पास्ट लाइफ डिप्रेशन थैरेपिस्ट, एंजेलिक हीलर, 5डी लाइट हीलर (यूके) आदि कोर्स भी किए हैं।

संकल्प से सिद्धि

ईश्वरीय कार्य में लाखों रुपये सेवा का संकल्प हो रहा पूरा

राजयोग से जीवन में मिली तरक्की, आज है 35 लाख रुपये का पैकेज

शिव आमंत्रण, आबूरोड

वर्ष 2012 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आया। सात दिन का राजयोग कोर्स करने के बाद संकल्प कर लिया कि ईश्वरीय कार्य में मुझे लाखों रुपये से सेवा करनी है। भौतिक तरक्की के साथ आध्यात्मिक रूप से भी उन्नति करनी है। राजयोग के अभ्यास से एकाग्रता बढ़ी और पढ़ाई में अव्वल आने लगा। परमात्म आशीर्वाद से बीटेक करने के बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियर बन गया। आज 35 लाख रुपये का सालाना पैकेज है। बचपन का सपना ईश्वरीय यज्ञ में धन से लाखों रुपये की सेवा करने का पूरा हो रहा है।

यह कहना है बिहार हाजीपुर निवासी सॉफ्टवेयर इंजीनियर बीके भास्कर भाई (35) का। शिव आमंत्रण से विशेष चर्चा में आपने अध्यात्म से जुड़े अपने अनुभव सांझा किए। साथ ही युवाओं को सफलता के लिए जरूरी टिप्स बताए।

भास्कर भाई ने बताया कि 2016 में पहली बार परमात्म मिलन शिविर में मुख्यालय शांतिवन पहुंचा। पहली बार प्रत्यक्ष में बाबा मिलन करने पर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ऐसा लगा जिसकी तलाश वर्षों से थी, वह आज पूरी हो गई। उस दिन फिर से संकल्प किया कि प्यारे बाबा आपके यज्ञ में मुझे लाखों रुपये से सेवा करनी है। बाबा का ही कमाल है कि पढ़ाई के बाद अच्छी जॉब मिली और लगातार मेरा पैकेज बढ़ता गया। आज मैं वर्क फ्रॉम होम करता हूं और मेरा सालाना पैकेज 35 लाख रुपए है। अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा हर माह बाबा की सेवा में लगाता हूं।

युवाओं से आह्वान

मेरा सभी युवाओं से यही आह्वान है कि युवा चाहें तो संकल्प शक्ति, एकाग्रता और परमात्म मदद से असंभव को भी संभव बना सकते हैं। मेरी सफलता में सबसे बड़ा योगदान राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्मिक ज्ञान का है। ज्ञान में मुझे स्पष्ट लक्ष्य मिला और राजयोग से लक्ष्य पर फोकस कर पाया। पढ़ाई के दौरान यदि हम राजयोग मेडिटेशन करते हैं तो इससे याद करना आसान हो जाता है। मन शांत रहता है और तनाव से बचे रहते हैं।

प्रेरक कहानी

राजयोग से मेरे विचारों, व्यवहार दृष्टिकोण में परिवर्तन आया

योग का अभ्यास बढ़ा तो मन में स्थिरता, धैर्य और आत्मविश्वास का अनुभव होने लगा

शिव आमंत्रण, आबूरोड

मेरा सौभाग्य है कि मुझे बचपन से ही परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य ज्ञान और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का सान्निध्य प्राप्त हुआ। जब मैं छोटा था, तब मेरी मम्मी नियमित रूप से मुझे अपने साथ सेवाकेंद्र ले जाया करती थीं। उस समय शायद मैं ज्ञान की गहराई को पूरी तरह समझ नहीं पाता था, लेकिन वहां का शांत वातावरण, मुरली सुनना, दीदियों के स्नेहिल संस्कार तथा परमात्मा की याद मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते गए। आज पीछे मुड़कर देखता हूं तो अनुभव होता है कि शिव बाबा ने बचपन से ही मुझे अपनी छत्रछाया में रखा और जीवन की सही दिशा प्रदान की।

यह कहना है मप्र सागर के बीके पीयूष भाई का। कम्प्यूटर से बीकाम करने के बाद आप निजी कंपनी में सेल्स और डिस्ट्रीब्यूशन की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में आपने अपने जीवने के अनुभव सांझा किए। बीके पीयूष भाई ने बताया कि नौकरी की जिम्मेदारियों के बीच भी मेरा प्रयास रहता है कि परमात्म श्रीमत के अनुसार जीवन जीने का पुरुषार्थ करता रहूं। जब भी अवसर मिलता है, बाबा की सेवा में अपना समय और सहयोग देना मेरे लिए सबसे बड़ा सौभाग्य होता है। राजयोग मेडिटेशन ने मेरे जीवन में जो परिवर्तन किए हैं, उन्हें शब्दों में व्यक्त करना आसान नहीं है। पहले कभी-कभी छोटी-छोटी बातों से मन विचलित हो जाता था, भविष्य की चिंता रहती थी और परिस्थितियां कठिन लगती थीं। लेकिन जैसे-जैसे योग का अभ्यास बढ़ा, वैसे-वैसे मन में स्थिरता, धैर्य और आत्मविश्वास का अनुभव होने लगा।

विचारों में आया परिवर्तन

सात्विक जीवनशैली अपनाने से मेरे विचारों, व्यवहार और दृष्टिकोण में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। क्रोध, व्यर्थ चिंतन और नकारात्मकता धीरे-धीरे कम होने लगी। मन में प्रेम, करुणा, सहनशीलता और सभी के प्रति शुभभावना बढ़ी। परिवार में मधुरता आई, कार्यस्थल पर भी सहयोगियों के साथ संबंध पहले से अधिक अच्छे हुए और हर कार्य को शांति तथा संतुलन के साथ करने की शक्ति मिली। जब दिन की शुरुआत मुरली और योग से होती है, तो पूरे दिन एक अदृश्य शक्ति साथ रहती है।

अलौकिकता का दिग्दर्शन कराने वाली अद्भुत जीवन-कहानी

रियल लाइफ

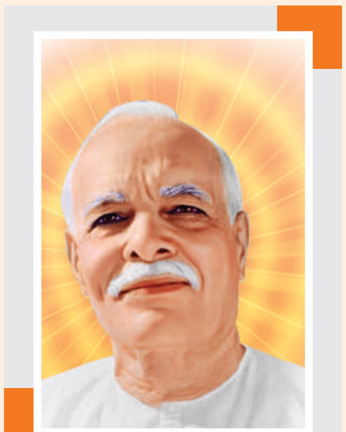

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

जीवन को पलटाने वाली एक अद्भुत जीवन कहानी के भाग-2 के संपादकीय में लेखक-जगदीश भाई लिखते हैं कि- हमने जीवन को पलटाने वाली अद्भुत जीवन-कहानी के भाग-1 में ब्रह्मा बाबा के सन् 1957 तक के कुछ वृत्तान्तों का संग्रह छापा था। अब इस भाग-2 में सन् 1957 के आगे से लेकर जनवरी, 1969 तक के कुछ वृत्तान्तों का उल्लेख किया गया है। साथ ही सन् 1936-37 से लेकर 1969 तक बाबा ने समय-समय पर विभिन्न व्यवसायों के लोगों को ईश्वरीय ज्ञान स्पष्ट करने के लिए जो-कुछ मार्ग-प्रदर्शना दी या लौकिक चीज़ों को देखते हुए भी उनमें अलौकिकता का दिग्दर्शन करने या उनसे गुण-ग्रहण करने की जो रीति-नीति बताई, उसका भी इस भाग में कुछ सार दिया गया है। अन्यश्च, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती ने अपने वर्तमान जीवन को सर्वोच्च ईश्वरीय सेवा में सफल करते हुए जो ब्रह्मा-वत्सों के मन पर अलौकिक एवं प्रेरणादायक छाप लगा दी, उसका भी इसमें संक्षिप्त वर्णन है।
वास्तव में इस दूसरे भाग में भी अद्भुत जीवन-कहानी' की समाप्ति नहीं हुई क्योंकि सन् 1969 में अव्यक्त होने के बाद भी ब्रह्मा बाबा का जो पार्ट चल रहा है, वह भी पहले ही की तरह बल्कि उससे भी अधिक जीवन को पलटाने वाला और अद्भुत बनाने वाला ही है। अब स्वयं इस प्रत्यक्ष सृष्टि-नाटक के पर्दे के पीछे छिपकर वे वत्सों को मंच पर उपस्थित कर एवं उनको निमित्त बनाकर जो कार्य कर रहे हैं, उसकी भी महत्ता अवर्णनीय है। पुनश्च, उनके द्वारा दी गई शिक्षा और मार्ग-प्रदर्शना से ब्रह्मा-वत्सों के जीवन में व्यक्तिगत रूप से जो परिवर्तन आया अथवा उन्हें अलौकिक रूप से जो प्राप्ति हुई, न तो उसका उल्लेख इन दो भागों में हुआ है और न ही उन ब्रह्मा-वत्सों की जीवन-कहानी की कुछ झलकियाँ इसमें दी जा सकी हैं, जिन्होंने प्रारम्भ में, मध्यकाल में या बाद में ब्रह्मा बाबा के तन में परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता का अनुभव करके अपने तन, मन, धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। उन ब्रह्मा-वत्सों के मुखारविन्द से मैंने उनके अनुभव के जो वृत्तान्त सुने है, वे निश्चय ही संसार के सत् साहित्य की एक अतुल और अद्वितीय निधि हैं जिन्हें सुनते-सुनते अथवा पढ़ते-पढ़ते मनुष्य के आध्यात्मिक पुरुषार्थ की गति बढ़ती है, मनोबल सुदृढ़ होता है।

पवित्रता का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं मिलेगा...

माया को परास्त करने की यथेष्ट शक्ति स्वयं में अनुभव होती है और निष्माण पुरुषार्थी में भी मानो प्राण-प्रतिष्ठा होती है। जिस समय से इस जीवन-कहानी का प्रारम्भ हुआ, उस काल में घर में बंदी की तरह रहने वाली एवं लौकिक शिक्षा से वंचित महिला वर्ग ने जिस अदम्य साहस, प्रबल प्रभु-प्रेम, दावानल की तरह न बुझने वाली लग्न, पवित्रता को प्राप्त करने की गहरी प्यास का जो परिचय दिया, उसका कोई उदाहरण संसार के इतिहास के पन्नों में ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेगा। उनका संकलन करके उनका प्रकाशन अद्भुत जीवन-कहानी के भाग-3 के रूप में करने का मेरा विचार है। लेकिन जगदीश भाई के शरीर छोड़ने के बाद भाग-3 को प्रकाशित करने का उनका संकल्प अधूरा रह गया।

ज्ञान सरोवर में वैज्ञानिकों का राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

लोग तस्वीरें लेने में इतने बिजी हैं कि अपनी तकदीर बनाना भूल गए हैं: उपसभापति

शिव आमंत्रण, आबूराज

ब्रह्माकुमारीज़ के विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में 'आंतरिक प्रतिभाओं की अनुभूति में वृद्धि' विषय पर चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। 23 से 26 मई तक आयोजित इस सम्मेलन में देश-विदेश से आए वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं आध्यात्मिक चिंतकों ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर गहन विचार-विमर्श किया। उद्घाटन राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान ने दुनिया को भौगोलिक रूप से निकट ला दिया है, लेकिन रिश्तों में बढ़ती दूरियों को समाप्त करने का कार्य अध्यात्म ही कर सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ संगठन 140 देशों में आध्यात्मिक मूल्यों का प्रकाश फैलाकर विश्व में शांति और मानवीय संवेदनाओं को सशक्त बना रहा है। आज लोग अपनी तस्वीरें लेने में अधिक उत्सुक हैं, लेकिन अपनी तकदीर बनाना भूल गए हैं।

गुजरात सूचना आयोग के आयुक्त डॉ. सुभाष चंद्र आर. सोनी ने कहा कि विचारों का प्रदूषण प्रकृति के लिए सबसे अधिक घातक है। विज्ञान के साथ अध्यात्म का समन्वय आवश्यक है, अन्यथा विकास अधूरा रहेगा। ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिढ्ढा ने पर्यावरणीय एवं मानवीय संकटों से निपटने के लिए विज्ञान और अध्यात्म के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी ने कहा कि विज्ञान तभी मानवता के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा, जब उसमें आध्यात्मिक चेतना का समावेश होगा। राजयोग के माध्यम से आत्मा की मन, बुद्धि और संस्कार रूपी शक्तियों का जागरण संभव है।

सम्मेलन का निष्कर्ष रहा कि विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय ही मानवता के समग्र विकास, मानसिक शांति, पर्यावरण संरक्षण तथा विश्व कल्याण का प्रभावी मार्ग है। राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आंतरिक प्रतिभाओं का जागरण कर व्यक्ति स्वयं के साथ समाज और विश्व में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

ये भी रहे मौजूद: सम्मेलन में नेपाल के संयुक्त सचिव राम कुमार श्रेष्ठ, आंध्रप्रदेश के सीसीएफ संगम रेड्डी श्रीकांत, आईओसी की सीजीएम अंजली भावे, ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव बीके करूणा, पूर्व निदेशक ए. भौमिक, बीके भारत भूषण, बीके पीयूष, माधुरी बहन, बीके ओंकार चंद, नरेंद्र पटेल, विनोद कुमार जैन, बीके दिनेश सहित देश-विदेश के वैज्ञानिक, अभियंता, उद्योग विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

वक्ता बोले-

- विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग के अध्यक्ष मोहन सिंघल ने कहा कि विज्ञान और अध्यात्म का संतुलन ही जीवन को सार्थक बनाता है तथा सकारात्मक चिंतन आत्मिक कल्याण का आधार है।
- दिल्ली से ओएनजीसी के प्रबंधक राजऋषि गुप्ता ने कहा कि विज्ञान के साथ साइलेंस की शक्ति को जोड़ना आवश्यक है।
- आईजीएल के प्रबंधक के.के. चाटीवाल ने आधुनिक संसाधनों के संयमित उपयोग और मानसिक शक्ति के संरक्षण पर जोर दिया।
- हॉक्सवेल यूके के सीईओ डॉ. उमेश पूर्वे ने कहा कि मानव मन की पीड़ा का स्थायी समाधान केवल अध्यात्म से ही संभव है।
- केन्या से आए रामको ग्रुप के पूर्व सीईओ अनिल गुप्ता ने कहा कि विज्ञान के दुरुपयोग से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से ही संभव है।

यातायात प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

विचार ही जीवन परिवर्तन का मूल आधार हैं: बीके करुणा

शिव आमंत्रण, आबूराज

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में यातायात प्रभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ आध्यात्मिक गरिमा के साथ हुआ। सम्मेलन में देशभर से आए यातायात, परिवहन एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य राजयोग के माध्यम से जीवन यात्रा को सकारात्मक, संतुलित एवं शांतिमय बनाना रहा।

ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव बीके करूणा भाई ने कहा कि विचार ही जीवन परिवर्तन का मूल आधार हैं। सकारात्मक चिंतन, नियमित साधना और ईश्वरीय ज्ञान का मनन जीवन को समर्थ बनाता है। उन्होंने कहा कि राजयोग मनुष्य की विचार-यात्रा को सही दिशा देता है तथा उसे आंतरिक शक्ति और स्थिरता प्रदान करता है। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े आज लाखों लोग इस बात का प्रमाण हैं कि यदि जीवन में विचार बदलते हैं तो जीवन की दशा और दिशा पूरी तरह बदल जाती है। राजयोगियों के खुशी से चमकते चेहरे इसके साक्षी हैं।

यातायात प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी बीके दिव्या बहन ने कहा कि प्रत्येक आत्मा इस संसार की यात्री है और उसका वास्तविक घर परमधाम है। भौतिक यात्राएं हमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाती हैं, जबकि राजयोग की आध्यात्मिक यात्रा हमें परमात्मा से जोड़कर जीवन में शांति, आनंद और आत्मिक संतोष का अनुभव कराती है। उन्होंने अध्यात्म, परोपकार, स्वच्छता, पवित्रता, सादगी और पर्यावरण संरक्षण को वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता बताया। इन मूल्यों को अपनाकर ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है।

ज्ञान सरोवर की निदेशिका बीके प्रभा दीदी ने कहा कि अध्यात्म से जुड़ने पर मन का भटकाव समाप्त हो जाता है। राजयोग जीवन यात्रा को सुखद बनाने की अचूक औषधि है। ध्यान और ज्ञान के अभ्यास से मन में चलने वाले व्यर्थ संकल्पों का प्रवाह रुकता है तथा व्यक्ति आंतरिक शांति का अनुभव करता है।

अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि जन्म से ही प्रत्येक मनुष्य एक यात्री है, लेकिन राजयोग की यात्रा उसे आत्मिक शांति और जीवन के वास्तविक उद्देश्य का बोध कराती है। सम्मेलन में प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके सुरेश शर्मा, राष्ट्रीय संयोजिका बीके संगीता बहन सहित अनेक वक्ताओं ने भी आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने का संदेश दिया।

चार दिवसीय सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके शीलू बहन, अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके ईवीस्वामीनाथन, प्रेरक वक्ता बीके गिरीश, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. सचिन तथा बीके मुकुल ने ईश्वरीय ज्ञान, सकारात्मक चिंतन, आत्मचेतना, परमात्मा से संबंध जैसे विषयों पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया। सम्मेलन में देशभर से 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

बाबा को राज़ी करना ही सबसे बड़ी प्राप्ति है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

मीठे बाबा हम सभी बच्चों को एक बहुत सुंदर बात बार-बार स्मृति दिलाते हैं बच्चे, स्वयं को आत्मा समझो और मुझे याद करो। जब यह एक बात जीवन में दृढ़ हो जाती है, तब अनेक प्रकार की माया स्वतः समाप्त होने लगती है। उनमें सबसे सूक्ष्म माया है- नाम, मान और शान की माया। यह माया बहुत आकर्षक दिखाई देती है, इसलिए कई बार साधना के मार्ग पर चलते हुए भी आत्मा इसकी पकड़ में आ जाती है और स्वयं भी अनुभव नहीं कर पाती।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि लोग उसका नाम लें, उसकी प्रशंसा करें, उसे सम्मान दें और उसे विशेष समझें। लेकिन बाबा हमें एक अलग ही जीवन जीना सिखाते हैं। बाबा कहते हैं- बच्चे, तुम ट्रस्टी हो, निमित्त हो, कराने वाला मैं हूँ। जब यह निश्चय बुद्धि में बैठ जाता है, तब मन हल्का रहता है। जहाँ मैंने किया का भाव आया, वहीं देह-अभिमान का आरंभ हो जाता है। जहां बाबा करा रहे हैं का अनुभव रहा, वहां सहज ही विनम्रता और आत्मिक खुशी बनी रहती है।

बच्चे, ज़रा अपने मन को देखो। कभी-कभी सेवा करते समय मन में यह संकल्प आता है कि मेरे कार्य की सराहना होनी चाहिए, मेरा नाम भी आना चाहिए, मुझे भी आगे रखा जाए। यदि ऐसा नहीं होता तो मन थोड़ा उदास हो जाता है। यही सूक्ष्म माया है। माया कभी बड़े रूप में नहीं आती, वह बहुत सूक्ष्म बनकर आती है। इसलिए बाबा कहते हैं- सदा अपने चेकिंग मास्टर बनो। मन में कोई भी संकल्प उठे, तुरंत उसे बाबा के सामने रख दो। बाबा की याद उस संकल्प को सहज ही समाप्त कर देगी।

याद रखो, बच्चों, सेवा का फल लोगों की वाहवाही नहीं है। सेवा का सबसे बड़ा फल है बाबा की दुआएं और आत्मा की संतुष्टि। यदि सारी दुनिया प्रशंसा करे, लेकिन बाबा राज़ी न हों, तो वह प्राप्ति क्षणिक है। और यदि संसार कुछ भी न कहे, लेकिन बाबा के दिल से यह आवाज़ आए- वाह मेरे बच्चे! तो इससे बड़ी कोई प्राप्ति नहीं हो सकती।

बाबा हमें फूल के समान बनने की शिक्षा देते हैं। फूल कभी यह नहीं कहता कि मेरी सुगंध की प्रशंसा करो। वह तो अपना स्वभाव निभाता है। जो भी उसके पास आता है, उसे सुगंध और आनंद मिलता है। इसी प्रकार ब्राह्मण जीवन भी ऐसा होना चाहिए। हम जहाँ जाएँ, वहां प्रेम, शांति, मधुरता और सहयोग का वातावरण बन जाए। यही हमारी वास्तविक पहचान है। पहचान नाम से नहीं, गुणों से बनती है।

वास्तव में जो जितना बड़ा होता है, वह उतना ही विनम्र होता है। फल से लदा हुआ वृक्ष झुक जाता है। गुणों से सम्पन्न आत्मा भी सदैव नम्र रहती है। स्वमान और अभिमान में अंतर समझना बहुत आवश्यक है। स्वमान आत्मा का अलौकिक श्रृंगार है, जबकि अभिमान देह का बोझ है। स्वमान में रहने वाली आत्मा सबको सम्मान देती है। उसे किसी से सम्मान लेने की आवश्यकता नहीं रहती। उसका खजाना भरा हुआ होता है। लेकिन जो सम्मान चाहता है, वह भीतर से खाली होता है। इसलिए बाबा कहते हैं- सम्मान लेने वाले नहीं, सम्मान देने वाले बनो।

आज संसार में अशांति का एक बड़ा कारण तुलना है। किसी को अधिक सम्मान मिला, किसी को कम; किसी का नाम समाचार में आया, किसी का नहीं; किसी को आगे बैठाया गया, किसी को पीछे। यदि हमारी खुशी इन बातों पर निर्भर है, तो समझना चाहिए कि अभी आत्मिक स्थिति मजबूत नहीं हुई है। राजयोग हमें यही शक्ति देता है कि परिस्थितियाँ बदलें, लोग बदलें, व्यवहार बदलें, फिर भी हमारी स्थिति अचल बनी रहे।

आत्मिक चेतना से होगा विश्व परिवर्तन

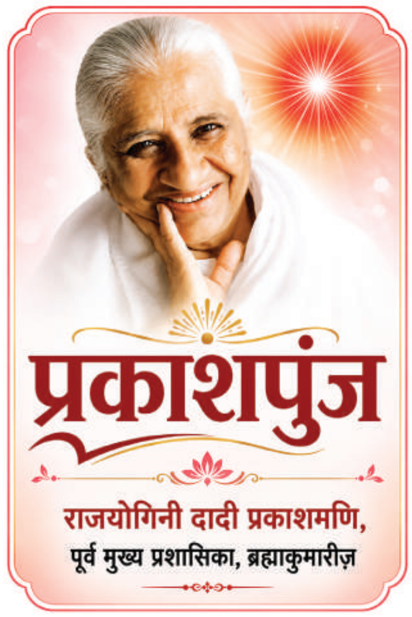

आज मनुष्य ने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। दूरियां समाप्त हो गई हैं, संसार एक छोटे से परिवार जैसा दिखाई देता है। लेकिन यदि हम अपने मन की स्थिति को देखें तो पाएँगे कि आज भी अशांति, भय, असुरक्षा और तनाव बढ़ते जा रहे हैं। इसका कारण बाहरी परिस्थितियां नहीं हैं, बल्कि हमारे विचारों की दिशा है। जब मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है, तभी जीवन में विभाजन और संघर्ष प्रारम्भ हो जाते हैं।

हम सबका पहला परिचय शरीर नहीं, आत्मा है। आत्मा न हिन्दू है, न मुसलमान, न भारतीय, न विदेशी। आत्मा तो केवल एक ज्योतिबिंदु चेतना है, जो परमपिता परमात्मा की संतान है। जब यह स्मृति जागृत होती है, तब हमारे मन में सहज ही सभी के प्रति सम्मान, स्नेह और शुभभावना उत्पन्न होती है। तब कोई पराया नहीं लगता। सम्पूर्ण विश्व अपना परिवार अनुभव होने लगता है। विश्व बंधुत्व किसी संगठन का नारा नहीं है, यह आत्मा की स्वाभाविक अवस्था है। जब मन में पवित्रता होती है, तब दृष्टि में समानता आती है। जब दृष्टि बदलती है, तब व्यवहार बदलता है। और जब व्यवहार बदलता है, तभी समाज में परिवर्तन दिखाई देता है। इसलिए विश्व परिवर्तन की शुरुआत स्वयं के परिवर्तन से होती है।

आज संसार को उपदेशों से अधिक श्रेष्ठ उदाहरणों की आवश्यकता है। यदि हमारे जीवन में प्रेम है, हमारी वाणी में मधुरता है, हमारे व्यवहार में विनम्रता है और हमारे कर्मों में सेवा की भावना है, तो हम बिना कुछ कहे भी अनेक लोगों के जीवन में आशा का दीप जला सकते हैं। मनुष्य शब्दों से कम और संस्कारों से अधिक प्रभावित होता है।

राजयोग हमें यही शिक्षा देता है कि पहले स्वयं को आत्मा अनुभव करो और फिर परमात्मा से अपना संबंध जोड़ो। जब मन परमात्मा के प्रेम से भर जाता है, तब भीतर की कमजोरी समाप्त होने लगती है। क्रोध की जगह शांति, घृणा की जगह प्रेम, प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग और स्वार्थ की जगह सेवा का भाव जागृत होता है। यही परिवर्तन विश्व बंधुत्व की वास्तविक नींव है।

आज प्रत्येक परिवार, प्रत्येक संस्था और प्रत्येक राष्ट्र को ऐसी आत्मिक चेतना की आवश्यकता है, जो जोड़ने का कार्य करे, तोड़ने का नहीं। यदि हम प्रत्येक व्यक्ति में विशेषताएँ देखने का अभ्यास करें, कमियों को नहीं; यदि हम सम्मान देना सीखें, अपेक्षाएँ कम रखें; यदि हम क्षमा करना सीखें, शिकायतें न बढ़ाएं तो हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी विश्व में शांति की एक नई लहर उत्पन्न कर सकते हैं। याद रखिए, संसार में प्रकाश फैलाने के लिए बहुत बड़े दीपक की आवश्यकता नहीं होती। एक छोटा-सा दीपक भी अंधकार को चुनौती दे देता है। उसी प्रकार एक श्रेष्ठ आत्मा का पवित्र संकल्प अनेक हृदयों को बदलने की शक्ति रखता है। परिस्थितियों को देखकर निराश नहीं हों, बल्कि स्वयं आशा और शक्ति का स्रोत बनना है।

आइए, आज हम सब एक श्रेष्ठ संकल्प करें कि हम जहां भी रहें, वहां प्रेम का वातावरण बनाएंगे। हमारी वाणी से किसी का मन न दुखे, हमारे व्यवहार से किसी को अपनापन मिले और हमारे संकल्पों से सम्पूर्ण विश्व के लिए शुभकामनाएं प्रवाहित हों। प्रतिदिन कुछ समय परमात्मा की याद में बैठकर सम्पूर्ण विश्व को शांति की किरणें देना भी विश्व सेवा का महान माध्यम है।

हमारा परमात्मा पर हो संपूर्ण निश्चय

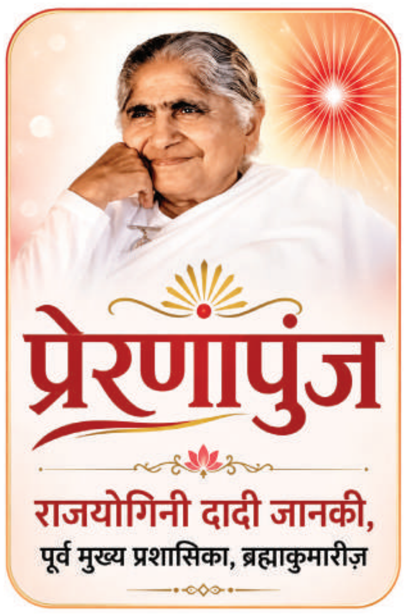

जीवन में बहुत प्रकार की परिस्थितियां आती हैं। कभी सफलता मिलती है, कभी परीक्षा सामने आती है। कभी लोग साथ देते हैं, कभी अकेले भी चलना पड़ता है। ऐसे समय में मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता किस बात की होती है? शक्ति की। और वह शक्ति कहां से मिलती है? परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय से।

निश्चय का अर्थ केवल यह नहीं कि हम कहते रहें कि परमात्मा है। सच्चा निश्चय तब है, जब हर परिस्थिति में मन डगमगाए नहीं। बाहर कितना भी परिवर्तन हो, भीतर का विश्वास अचल रहे। जब यह अनुभव हो जाता है कि परमात्मा मेरा साथी है, मेरा सहारा है, मेरा शिक्षक है, तब भय अपने आप समाप्त होने लगता है। परमात्मा को जानना और परमात्मा पर विश्वास रखना- ये दो अलग बातें हैं। अनेक लोग परमात्मा का नाम लेते हैं, लेकिन परिस्थिति आते ही चिंता, डर और असुरक्षा में आ जाते हैं। इसका अर्थ है कि ज्ञान बुद्धि तक पहुँचा है, लेकिन अनुभव हृदय तक नहीं पहुँचा। जहाँ अनुभव होता है, वहाँ विश्वास स्वतः अटल हो जाता है।

अपने आप से पूछिए क्या मेरा मन हर समय परमात्मा के साथ जुड़ा रहता है? क्या निर्णय लेते समय मैं परमात्मा की श्रीमत को याद रखता हूँ? क्या कठिन समय में मेरा पहला संकल्प परमात्मा की ओर जाता है या समस्या की ओर? इन प्रश्नों का उत्तर ही हमारे निश्चय की पहचान है।

जब बुद्धि एक परमात्मा से जुड़ जाती है, तब मन हल्का हो जाता है। व्यर्थ संकल्प समाप्त होने लगते हैं। दूसरों के व्यवहार से मन प्रभावित नहीं होता। परिस्थितियाँ हमें हिलाने का प्रयास करती हैं, लेकिन हम भीतर से स्थिर रहते हैं। यही राजयोग की कमाई है। परमात्मा कभी किसी को निराश नहीं करते। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने मन को स्वच्छ रखें। जहाँ अहंकार है, वहाँ परमात्मा की शक्ति का अनुभव कम होता है। जहाँ नम्रता है, वहाँ उनका सहयोग सहज प्राप्त होता है। शिकायत छोड़िए, तुलना छोड़िए, व्यर्थ चिंतन छोड़िए। मन जितना निर्मल होगा, उतना ही परमात्मा का साथ अनुभव होगा। विश्वास का दूसरा नाम है समर्पण। जब हम अपना बोझ परमात्मा को सौंप देते हैं, तब जीवन सहज हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि कर्म छोड़ दें। कर्म तो पूरे पुरुषार्थ से करना है, लेकिन चिंता नहीं करनी है।

ब्राह्मण जीवन में मर्यादाओं का महत्व

ब्राह्मण जीवन परमात्मा का दिया हुआ एक दिव्य वरदान है। यह केवल जीवन जीने की एक पद्धति नहीं, बल्कि स्वयं को श्रेष्ठ संस्कारों से सम्पन्न बनाकर विश्व के कल्याण का निमित्त बनने का सौभाग्य है। ऐसे महान जीवन की सुंदरता और सफलता का आधार है मर्यादाएं। मर्यादाएं बंधन नहीं हैं, वे हमारी सुरक्षा, हमारी गरिमा और हमारी आध्यात्मिक उन्नति का दिव्य कवच हैं।

जब कोई आत्मा परमात्मा की शरण में आती है, तब उसका जीवन साधारण नहीं रहता। उसके प्रत्येक संकल्प, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कर्म का प्रभाव अनेक आत्माओं पर पड़ता है। इसलिए ब्राह्मण जीवन में हर कदम श्रीमत के आधार पर उठाना आवश्यक है। जहां श्रीमत है, वहां मर्यादा है और जहां मर्यादा है, वहां परमात्मा का सहयोग सहज प्राप्त होता है। ब्राह्मण जीवन हमें संयम और संतुलन का मार्ग सिखाता है। मर्यादा हमारी स्वतंत्रता को सीमित नहीं करती, बल्कि उसे श्रेष्ठ दिशा देती है। नदी अपने किनारों के कारण ही निरंतर बहती है और सबका कल्याण करती है। यदि किनारे समाप्त हो जाएँ, तो वही जल विनाश का कारण बन जाता है। मर्यादाएं हमारे शक्ति का आधार हैं। ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़ी मर्यादा है सदैव आत्म अभिमानी स्थिति में रहना। जब हम स्वयं को आत्मा अनुभव करते हैं, तब व्यवहार में सहज सम्मान, नम्रता और पवित्रता आ जाती है। हमारी दृष्टि बदल जाती है। हम किसी की कमियों को देखने के बजाय उसकी विशेषताओं को स्वीकार करना सीखते हैं। यही ब्राह्मण जीवन की सुंदरता है।

मर्यादा केवल बाहरी आचरण तक सीमित नहीं है। हमारी वाणी भी मर्यादित हो, हमारे विचार भी मर्यादित हों और हमारी भावनाएँ भी मर्यादित हों। परमात्मा ने हमें जो श्रेष्ठ मर्यादाएं दी हैं, वे हमारे जीवन को सहज, सरल और सफल बनाने का माध्यम हैं। समय की मर्यादा, सेवा की मर्यादा, संबंधों की मर्यादा, वाणी की मर्यादा और संगठन की मर्यादा ये सभी मिलकर ब्राह्मण जीवन को दिव्यता प्रदान करती हैं। जो इन मर्यादाओं का आदर करता है, उसका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

आदिवासी समाज कभी प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाता, पंचतत्वों की पूजा करते हैं : राष्ट्रपति

बैतूल बना गौरव के क्षण का साक्षी, राष्ट्रपति ने जनजातीय समुदाय की जीवनशैली को सराहा

शिव आमंत्रण, बैतूल (मप्र)

पहली बार राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के आगमन से बैतूल गौरव के क्षण का साक्षी बना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित आध्यात्मिक जागृति द्वारा आदिवासी समाज का सशक्तिकरण महासम्मेलन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने आदिवासी समाज की जीवनशैली, प्रकृति संरक्षण, आध्यात्मिक मूल्यों की सराहना की। उन्होंने कहा जनजातीय समुदाय भारत की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विरासत का सच्चा संवाहक है। आदिवासी समाज सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जी रहा है। यही जीवनशैली आज पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा बन सकती है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि आदिवासी समाज के मन में आध्यात्मिकता कूट कूटकर भरी है। वे धरती, आकाश, वायु, जल, सूर्य-चंद्र जैसे पंचतत्वों की पूजा करते हैं। उनकी परंपराएं प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण का संदेश देती हैं। आदिवासी आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने में विश्वास रखता है। वे अपनी समस्याओं को लेकर अनावश्यक शिकायत नहीं करते। धैर्यपूर्वक अपनी बारी का इंतजार करते हैं। कई बार योजनाओं का लाभ मिलने में विलंब होता है। बावजूद वे संयम रखते हैं। वास्तविक सशक्तिकरण केवल आर्थिक उन्नति नहीं आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, सामाजिक सम्मान से भी जुड़ा है।

भारत निर्माण में सबकी भागीदारी जरूरी

राष्ट्रपति ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के विचारों का उल्लेख किया। भारत केवल भूमि का टुकड़ा नहीं है। यह एक जीवंत राष्ट्र है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य तभी पूरा होगा जब समाज का कोई भी वर्ग विकास की मुख्यधारा से पीछे न रहे। आध्यात्म, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, मानव कल्याण को विकास का आधार बनाना होगा। राष्ट्रपति ने दीप प्रज्वलन कर एवं झंडा व कलश देकर अभियान का शुभारंभ किया।

नशामुक्त समाज बनाना

ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल सबजोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके शैलजा दीदी ने कहा कि समाज को सशक्त, नशा मुक्त, स्वच्छ, अंधविश्वास मुक्त करने हेतु यह महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ बैतूल क्षेत्र की निदेशिका एवं महासम्मेलन की सूत्रधार बीके मंजू दीदी ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि माननीय राष्ट्रपति ने बैतूल की धरती पर कदम रख हम सभी को गौरवान्वित किया।

राज्यपाल भी रहे मंचासीन... इस दौरान राज्यपाल मंगूभाई पटेल, बैतूल प्रभारी एवं राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, ब्रह्माकुमारीज़ के न्यायविद् प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके नथमल भाई भी उपस्थित रहे। संचालन बीके लीना दीदी ने किया।

विश्व सिकल सेल दिवस पर राष्ट्रपति ने किया बीके श्यामा दीदी का सम्मान

ओंकारेश्वर (खंडवा, म.प्र.)

विश्व सिकल सेल दिवस के अवसर पर 19 जून 2026 को ओंकारेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने ब्रह्माकुमारीज़ ओंकारेश्वर सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके श्यामा दीदी को समाज सेवा एवं जनकल्याण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया।

कार्यक्रम में सिकल सेल उन्मूलन, स्वास्थ्य जागरूकता तथा जनसेवा से जुड़े विभिन्न आयोजनों का आयोजन किया गया। सिकल सेल ट्रस्ट 2026 के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ ओंकारेश्वर सेवाकेंद्र द्वारा समय-समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रम संचालित किए जाते रहे हैं। इसी क्रम में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर तथा समाज हित में किए गए सेवा कार्यों के लिए बीके श्यामा दीदी को राष्ट्रपति के करकमलों से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति से आत्मीय भेंट की। प्रतिनिधिमंडल में खंडवा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शक्ति दीदी, हरसूद सेवाकेंद्र प्रभारी बीके संतोष दीदी, पंधाना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुरेखा दीदी, बीके रेखा दीदी, मधुबन से पधारे बीके महेंद्र भाई, बीके रुड़मल अग्रवाल, बीके सुनील तीर्थानी, बीके राहुल भाई तथा बीके रुद्र भाई उपस्थित रहे। इस दौरान राजयोग मेडिटेशन, आध्यात्मिक मूल्यों तथा वर्तमान समय में आध्यात्मिक जागृति की आवश्यकता पर सार्थक चर्चा हुई। राष्ट्रपति ने मानव मूल्यों के संवर्धन तथा समाज में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की। ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की ओर से राष्ट्रपति को ईश्वरीय स्मृति-चिह्न भेंट किया गया, जिसे उन्होंने आत्मीयता के साथ स्वीकार किया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड,
जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8740060231, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960
Scan To Pay

दिव्यांगता क्षमता में बाधा नहीं, आत्मबल से जीवन में नई ऊंचाइयां प्राप्त कर सकते हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिव्यांगजन सेवा प्रभाग द्वारा मानसरोवर परिसर में 13 से 17 जून तक 'दिव्यांगजन समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण' विषय पर विशेष प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांगजनों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आध्यात्मिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना था।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. सूर्यप्रकाश भाई सहित अनेक वरिष्ठ राजयोगी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में दृष्टिबाधित प्रतिभागियों तथा उड़ान विशेष विद्यालय के शिक्षकगण ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम के दौरान दिव्यांगजनों के अधिकार, समान अवसर, आत्मसम्मान, व्यक्तित्व विकास तथा राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से मानसिक एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण जैसे विषयों पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए। वक्ताओं ने कहा कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की क्षमता में बाधा नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प और आत्मबल से जीवन में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

समापन अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंधक राहुल मानकर को दिव्यांगजन सशक्तिकरण के क्षेत्र में सहयोग के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर डॉक्टरों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, मुजफ्फरपुर, बिहार।

आमगोला रोड स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सुख-शांति भवन में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस समारोह आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की ईस्टर्न जोन प्रभारी राजयोगिनी बीके रानी दीदी ने सभी चिकित्सकों का तिलक, माला एवं अंगवस्त्र से सम्मान किया।

बीके रानी दीदी ने कहा कि जब व्यक्ति स्वयं को आत्मा समझकर कर्म करता है तो वह सदैव हल्कापन, शांति और आंतरिक शक्ति का अनुभव करता है। उन्होंने सभी चिकित्सकों के सुखी, स्वस्थ और सदैव प्रसन्न रहने की शुभकामनाएं दीं। वरिष्ठ चिकित्सक प्रो. डॉ. बी.बी. ठाकुर ने चिकित्सा सेवा में आध्यात्मिकता, योग, प्राणायाम एवं ध्यान को अपनाने पर बल दिया। डिप्टी मेयर डॉ. मोनालिसा ने चिकित्सकों के त्याग एवं समर्पण की सराहना की, जबकि डॉ. अरुण शाह ने चिकित्सकों के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता बताई। डॉ. बी.एल. सिंघानिया एवं डॉ. एच.एन. भारद्वाज ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में डॉ. बी.बी. ठाकुर, डॉ. बी.एल. सिंघानिया, डॉ. मोती सिन्हा, डॉ. अरुण शाह, डॉ. एच.एन. भारद्वाज, डॉ. नवीन कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. रश्मि प्रिया, डॉ. मोनालिसा, डॉ. अजीत कुमार, डॉ. पीयूष शिवासा, डॉ. ललन तिवारी एवं डॉ. फनीश चन्द्र का सम्मान किया गया। संचालन बीके डॉ. फनीश चन्द्र ने किया।

यातायात एवं परिवहन प्रभाग के तहत रायपुर में 'यात्री कृपया ध्यान दें' कार्यक्रम आयोजित

जीवन यात्रा में मुस्कान हमारी सबसे बड़ी पहचान है

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा 'यात्री कृपया ध्यान दें' अभियान के अंतर्गत 'सुहाना सफर–एन एडवेंचर इन टू अवेयरनेस' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भौतिक यात्रा और जीवन यात्रा के बीच समानताओं को स्पष्ट करते हुए जीवन को सरल, आनंदमय एवं सफल बनाने का संदेश देना था।

यातायात प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके कविता दीदी, विधायक पुरंदर मिश्रा, पुलिस आयुक्त डॉ. संजीव शुक्ला, रेलवे के अपर मंडल प्रबंधक बजरंग अग्रवाल, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी, बीके सविता दीदी एवं बीके सुवास भाई उपस्थित रहे। बीके कविता दीदी ने कहा कि जीवन की यात्रा में मुस्कान हमारी सबसे बड़ी पहचान और लोगों की दुआएँ सबसे बड़ी दवा हैं। उन्होंने राजयोग मेडिटेशन, सकारात्मक सोच, पर्यावरण संरक्षण, वास्तविक संबंधों और डिजिटल संतुलन का संदेश देते हुए जीवन में आने वाले परिवर्तनों को सहजता से स्वीकार करने की प्रेरणा दी।

विधायक पुरंदर मिश्रा ने सड़क सुरक्षा एवं जनजागरूकता पर बल दिया। पुलिस आयुक्त डॉ. संजीव शुक्ला ने कहा कि देने का भाव ही जीवन को सार्थक बनाता है। बजरंग अग्रवाल ने सरल जीवन और संतोष की भावना अपनाने का संदेश दिया, जबकि अवधेश कुमार त्रिवेदी ने जीवन और रेल यात्रा की समानताओं पर प्रकाश डाला।

केंद्रीय मंत्री से भेंट

नई दिल्ली। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार से मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल के नेतृत्व में ब्रह्माकुमारीज़ प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार भेंट कर सामाजिक उत्थान, नशामुक्ति एवं मूल्यनिष्ठ समाज निर्माण से जुड़े विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चा की।

सम्मान समारोह आयोजित

अटलादरा/बड़ोदरा, गुजरात। राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस पर मेडिकल विंग द्वारा सेवाकेंद्र में 'हेल्दी डॉक्टर, हेल्दी सोसायटी' विषय पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के वरिष्ठ चिकित्सकों तथा पांच मेडिकल कॉलेजों के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

डॉक्टर डे मनाया

रांची, झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ के चौधरी बागान, हरमू रोड सेवाकेंद्र पर आयोजित राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस एवं राष्ट्रीय सीए दिवस में बीके प्रदीप, डॉ. हिमांशु श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव, डॉ. कुमकुम विद्यार्थी, डॉ. पवन बरनवाल, संचालिका बीके निर्मला दीदी, सीए एसोसिएशन के अध्यक्ष अनीश जैन, उपाध्यक्ष विवेक खोवाल, सीए शुभम केशरी तथा सीए श्रृंखला खोवाल मौजूद रहे।

डॉक्टर्स का किया सम्मान

भाटापारा, छग। नेशनल डॉक्टर्स डे के पर चिकित्सकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान आईएमए के अध्यक्ष डॉ. राजेश अवस्थी, सिविल सर्जन डॉ. अशोक झावर, डॉ. सुरेश निहलानी, डॉ. सरला निहलानी, डॉ. श्रीकांत शुक्ला, सर्जन डॉ. जी.सी. जांगड़े का सम्मान किया।

नशामुक्ति रैली निकाली

अररिया, बिहार।। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर नशा मुक्ति रैली निकाली गई। इसमें 150 लोगों ने नशामुक्त समाज निर्माण का बीके उर्मिला बहन ने शपथ दिलाई। शुभारम्भ पूर्व विधायक अच्यमित ऋषिदेव, नगर परिषद उपाध्यक्ष गौतम शाह, अध्यक्ष प्रतिनिधि धीरज नयन मिश्र, पार्षद राज किशोर यादव (मंगल यादव), भाजपा नेत्री सुष्मिता ठाकुर ने किया।

दिव्य संस्कार भवन का 31वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

351 राजयोग साधकों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, नरसिंहपुर, मप्र।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिव्य संस्कार भवन, नरसिंहपुर का 31वां वार्षिक महोत्सव परमहंस लॉन में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम जबलपुर से पधारी इंदौर जोन की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विमला दीदी के सान्निध्य तथा नरसिंहपुर में ईश्वरीय सेवाओं की जनक बीके कुसुम दीदी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। महोत्सव में जिलेभर से लगभग 800 भाई-बहनों सहित न्यायिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं शिक्षा जगत की अनेक हस्तियां उपस्थित रहीं।

बीके विमला दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में राजयोग ही आत्मा को परमात्मा से जोड़कर आंतरिक शांति एवं आत्मिक शक्ति प्रदान करने का श्रेष्ठ माध्यम है। उन्होंने दिव्य संस्कार भवन की 31 वर्षों की सेवाओं की सराहना करते हुए सभी को अपने जीवन में दिव्य संस्कार अपनाकर विश्व कल्याण में सहयोगी बनने का संदेश दिया।

जिला संचालिका बीके कुसुम दीदी ने कहा कि यह 31 वर्षों की यात्रा परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास, त्याग और निस्वार्थ सेवा का परिणाम है। उन्होंने प्रत्येक घर को सदाचारी, नशामुक्त एवं आध्यात्मिक मूल्यों से सम्पन्न बनाने का आह्वान किया। मजिस्ट्रेट शिवकांत कुशवाहा, पूर्व विधायक सुनील जायसवाल, वरिष्ठ अधिवक्ता विनय जैन, शुगर मिल संचालक हरी प्रताप ममार, परमहंस कॉलेज के चेयरमैन पंकज नेमा, समाजसेवी सुनील कोठारी, वरिष्ठ पत्रकार रुद्रेश तिवारी, नरेंद्र राजपूत तथा पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष संध्या कोठारी ने संस्था की सेवाओं की सराहना करते हुए शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर गाडरवारा से बीके उर्मिला दीदी, करेली से बीके सरोज दीदी, बीके जानकी दीदी तथा तेंदूखेड़ा से बीके प्रीति दीदी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में करेली, गाडरवारा, तेंदूखेड़ा, डोभी, आमगांव, सालीचौका एवं साईंखेड़ा सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए 351 समर्पित भाई-बहनों को ईश्वरीय सेवाओं में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सांसद ने किया बीके छाया दीदी का सम्मान

शिव आमंत्रण, सागर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज के मकरोनिया न्यू प्रभाकर नगर स्थित सेवाकेंद्र पर सागर सांसद लता वानखेड़े एवं भाजपा जिला अध्यक्ष श्याम तिवारी ने पहुंचकर सागर क्षेत्र की संचालिका बीके छाया दीदी का शॉल पहनाकर, पुष्पगुच्छ भेंटकर और स्मृति चिंह देकर सम्मान किया।

इस दौरान सांसद वानखेड़े ने कहा कि ब्रह्माकुमारी छाया दीदी ने अपना पूरा जीवन समाज के कल्याण में लगा दिया। आज आपका अभिनंदन करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भाजपा जिलाध्यक्ष तिवारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज की सामाजिक सेवाएं सराहनीय हैं। इस दौरान जगन्नाथ गुरैया भी मौजूद रहे।

स्वच्छ मानसिकता से ही पर्यावरण संकट का सामना संभव है : कुमारी शैलजा

ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'मदर नेचर' अभियान का भव्य आगाज़

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।

'आज वैश्विक स्तर पर हम जिस पर्यावरण संकट से जूझ रहे हैं, उसका समाधान केवल हमारी स्वच्छ मानसिकता से ही संभव है। प्रकृति मां ही हमारी असली परवरिश कर रही हैं, इसलिए सिर्फ नारों (स्लोगन) तक सीमित न रहकर हमें जमीनी स्तर पर इसके संरक्षण के लिए कार्य करना होगा। यह विचार लोकसभा सांसद कुमारी शैलजा ने व्यक्त किए।

वे शुक्रवार को ब्रह्माकुमारीज संस्थान के भोरा कलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित 'मदर नेचर' अभियान के शुभारम्भ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रही थीं। यह अभियान ओआरसी के रजत जयंती समारोह के तहत शुरू किया गया।

'ट्री मैन' के नाम से विख्यात एवं कल्पतरु संस्थान के संस्थापक विष्णु लांबा ने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान जाति और धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर विश्व कल्याण का कार्य कर रहा है। यहाँ अध्यात्म और प्रकृति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का मूल मंत्र देते हुए कहा कि आज के समय में पौधे लगाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उन्हें जीवित रखना और उनका पालन-पोषण करना है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने पर विशेष जोर दिया।

उन्होंने कहा कि बचपन में जो संस्कार पड़ते हैं, उनका प्रभाव जीवन भर रहता है। नशे के बढ़ते चलन पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि नशे की लत भी प्रकृति और मानव जीवन दोनों को दूषित करती है। इस दौरान उन्होंने उपस्थित बच्चों को जीवनभर नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा भी दिलाई।

दिल्ली (किंग्सवे कैंप) से आईं राजयोगिनी बीके साधना दीदी ने इस राष्ट्रव्यापी अभियान की रूपरेखा रखते हुए इसके पांच मुख्य बिंदुओं की जानकारी दी। जीवन शैली में परिवर्तन के द्वारा दैनिक आदतों को पर्यावरण अनुकूल बनाना।

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा "प्रकृति परिवर्तन" विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आर्ट ऑफ लिविंग के संचालक अजय तिवारी, सिंचाई विभाग के पूर्व कार्यपालन यंत्री सुरेंद्र दुबे, वन विभाग के पूर्व रेंजर जयप्रकाश पाण्डेय, सेवाकेंद्र संचालिका बीके विद्या दीदी तथा ब्रह्माकुमारी बहनों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज के लोधी रोड सेवाकेंद्र द्वारा डिजिटल वेलनेस विषयक त्रिदिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया। इसमें बीके दीपिका दीदी ने बच्चों को मूल्य शिक्षा के बारे में बताया।

शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल विंग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत बस स्टैंड पर नशा मुक्ति प्रदर्शनी एवं हस्ताक्षर अभियान आयोजित किया गया। शुभारंभ थाना प्रभारी दिलबाग सिंह (एसएचओ) ने किया। संचालिका बीके वसुधा दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन नशा मुक्ति का प्रभावी माध्यम है।

शिव आमंत्रण,विदिशा, मध्य प्रदेश। ब्रह्माकुमारी ए- 33 मुखर्जी नगर सेवा केंद्र द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान महिला पुलिस थाना प्रभारी उर्मिला यादव, सब इंस्पेक्टर मेघा शर्मा, डॉ. सुमंत जैन, वरिष्ठ समाजसेवी आरके कुलश्रेष्ठ, बीके रेखा बहन, बीके रुक्मणी बहन, बीके नन्दनी बहन, बीके अनु बहन मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

किल्लापारडी (गुजरात)। चाबुक मीडिया परिवार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारी पारुल बहन को आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सांसद धवलभाई पटेल ने ब्रह्माकुमारी पारुल बहन को सम्मान-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण अभियान का इंदौर में समापन

पुलिस सेवा में शारीरिक दक्षता के साथ मानसिक शक्ति भी आवश्यक : आईजी

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा 7 जून से चलाए जा रहे 'स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण' अभियान का समापन समारोह न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर, ओमशांति भवन में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक (ग्रामीण) अनुराग ने कहा कि पुलिस सेवा में शारीरिक दक्षता के साथ-साथ मानसिक रूप से सशक्त होना भी अत्यंत आवश्यक है। मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति ही विपरीत परिस्थितियों में सही निर्णय लेकर सकारात्मक और शांत रह सकता है।

इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने कहा कि स्व सशक्तिकरण ही राष्ट्र सशक्तिकरण का आधार है। जब व्यक्ति विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं पर सकारात्मक नियंत्रण स्थापित करता है, तभी वह स्वयं, समाज और राष्ट्र को सशक्त बना सकता है।

प्रेरक वक्ता एवं लाइफ कोच बीके संजीव भाई तथा बीके कमल भाई ने तनावमुक्त एवं संतुलित जीवन के लिए राजयोग मेडिटेशन की आवश्यकता पर जोर दिया। बीएसएफ के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक अशोक यादव ने सकारात्मक दृष्टिकोण और मानसिक शांति को गुणवत्तापूर्ण जीवन की आधारशिला बताया। कार्यक्रम में माउंट आबू से पधारे सुरक्षा सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके शैलेंद्र भाई ने प्रभाग की 25 वर्षों की सेवाओं की जानकारी दी। विशाखापट्टनम से बीके माधुरी बहन ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। बीके आकांक्षा बहन एवं रक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक बीके पुरुषोत्तम भाई ने प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किया।

दस दिवसीय मेंटल वेलनेस अभियान आयोजित

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

ब्रह्माकुमारीज सुरक्षा सेवा प्रभाग के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 10 दिवसीय 'मेंटल वेलनेस अभियान' का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. किरण बेदी, संयुक्त पुलिस आयुक्त जतिन नरवाल (आईपीएस), भारतीय नौसेना के पूर्व उप-प्रमुख वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) एस.एन. घोरमड़े, सेना मुख्यालय की प्रधान एकीकृत वित्तीय सलाहकार डॉ. वंदना (आईडीएएस), ईसीएचएस के निदेशक कर्नल राजीव सिंह तथा हरि नगर सब-ज़ोन की निदेशक राजयोगिनी बीके शुक्ला ने दीप प्रज्वलित कर अभियान का शुभारंभ किया।

700 से अधिक जवानों ने सीखा राजयोग

शिव आमंत्रण, दुर्ग (छत्तीसगढ़)।

ब्रह्माकुमारी के सुरक्षा सेवा प्रभाग की रजत जयंती के अवसर पर बघेरा स्थित आनंद सरोवर परिसर में 'आत्म सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जिला पुलिस बल, स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ), बटालियन, होमगार्ड तथा एनसीसी के 700 से अधिक अधिकारियों एवं जवानों ने भाग लिया।

दुर्ग की संचालिका बीके रीटा दीदी ने कहा कि देश की सुरक्षा में लगे जवान अनेक प्रकार के मानसिक दबाव और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हैं। ऐसे समय में आध्यात्मिकता ही मन को स्थिर और सुरक्षित रखने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने सभी जवानों से व्यसनों और नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रहकर आत्मिक शक्ति बढ़ाने का आह्वान किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने कहा कि जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाता है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य को भी समान महत्व देना आवश्यक है। स्वस्थ मन ही बेहतर निर्णय लेने और संतुलित जीवन जीने की आधारशिला है।

कार्यक्रम में एसटीएफ के पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल, होमगार्ड कमांडेंट नागेंद्र सिंह, डीएसपी चंद्रप्रकाश तिवारी, रक्षा मंत्रालय के जे.डब्ल्यू.एम. मिसाइल एवं रॉकेट परियोजना के वैज्ञानिक अधिकारी बीके पुरुषोत्तम, मेंटल वेलनेस स्पीकर बीके प्रिया, माउंट आबू से सुरक्षा सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके शैलेन्द्र, बीके रूपाली दीदी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वर्ल्ड कप विजेता क्रांति ने किया कैंप का उद्घाटन

घुवारा/छतरपुर (मध्य प्रदेश)। सेवाकेंद्र पर समर कैंप का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन वर्ल्ड कप विजेता क्रांति सिंह गौड़, संचालिका बीके नीतू दीदी ने किया। इस दौरान निहारिका सेन (प्राप्त कर मध्यप्रदेश में दसवीं में 98.8% के साथ छठा स्थान प्राप्त करने पर सम्मान किया गया।

सांसद ने किया बीके सीता दीदी का सम्मान

पन्ना, मप्र। जल गंगा संवर्धन अभियान के समापन में विष्णु दत शर्मा सांसद, पन्ना प्रभारी बीके सीता दीदी को सहयोग के लिए पुरस्कृत करते हुए। इस दौरान पन्ना विधायक बृजेंद प्रताप सिंह, कलेक्टर उषा परमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

एनआईटी में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित

कुरुक्षेत्र, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज विश्व शांति धाम द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) में आयोजित छह दिवसीय 'कैंपस वेल-बीइंग एवं मानसिक स्वास्थ्य' फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सशक्तिकरण एवं आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देना था। शुभारंभ प्रो. ब्रह्मजीत सिंह, डीन प्रो. मयंक दवे, प्रो. राजेश कुमार अग्रवाल, प्रो. अंशु पराशर, प्रो. थान सिंह सैनी, बीके सरोज बहन, डॉ. सचिन परब, डॉ. सुजाता, बीके राधिका बहन, बीके प्रियंका दीदी एवं बीके भगवत दयाल भाई द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

'मूल्य शिक्षा' विषय पर सेमिनार आयोजित

शिव आमंत्रण,मेहसाणा। ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा प्रभाग द्वारा गॉडली पैलेस में प्राचार्यों एवं शिक्षकों के लिए 'मूल्य शिक्षा' विषय पर शैक्षणिक सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में 'मेंटल एंड डिजिटल वेलनेस' तथा 'मूल्य शिक्षा की चुनौतियाँ' विषयों पर विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में जिले के 34 प्राचार्यों एवं शिक्षकों ने सहभागिता की। शुभारम्भ दीप प्रज्वलन से हुआ।

शिवशक्ति लीडरशिप अप्रोच रिट्रीट का आयोजन

लोनावला, महाराष्ट्र। विश्व मातृ दिवस के उपलक्ष्य में पारसमणी रिट्रीट सेंटर में मुलुंड सबज़ोन की निदेशिका गोदावरी दीदी के निर्देशन में शिवशक्ति लीडरशिप अप्रोच दो दिवसीय रिट्रीट का आयोजन किया गया। इसमें 150 ब्रह्माकुमारी बहनों सहित कुल 240 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिल्ली के लाल किला मैदान में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

20 हजार लोगों ने विश्व शांति की कामना के साथ किया राजयोग

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान एवं भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में ऐतिहासिक लाल किला मैदान में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 20 हजार से अधिक लोगों ने भाग लेकर विश्व शांति की कामना के साथ राजयोग मेडिटेशन किया तथा स्वस्थ, तनावमुक्त और आध्यात्मिक जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में मंच पर विराजमान 108 ब्रह्माकुमारी बहनों ने उपस्थित जनसमूह का राजयोग के माध्यम से मार्गदर्शन किया।

मुख्य अतिथि दिल्ली के उपमुख्यमंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा कि योग आत्मा की यात्रा का बोध कराता है और व्यक्ति को अपनी वास्तविक पहचान से जोड़ता है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज संस्थान के साथ अपने लंबे आत्मीय संबंधों का भी उल्लेख किया। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. महेश कुमार दाधीच ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवनशैली है। संतुलित आहार, उचित व्यवहार, पर्याप्त विश्राम और कर्म में कुशलता ही सच्चे योगी की पहचान है। भारतीय विदेश सेवा के पूर्व राजनयिक डॉ. दीपक वोहरा ने योग को आत्म-सुधार और आंतरिक उन्नति का प्रभावी माध्यम बताया। ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी, करोल बाग सेवाकेंद्र की निदेशिका राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

ब्रह्माकुमारीज एवं भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के संयुक्त अभियान के अंतर्गत 'गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' विषय पर विशेष प्रतिज्ञा भी कराई गई। बीके ब्रज भूषण ने कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न योगासन एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया। सुप्रसिद्ध गायक हरीश मोयल, बी.के. चाँद तथा बी.के. हंसी ने प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में चांदनी चौक के सांसद प्रवीण खंडेलवाल, एनएमपीबी के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी अब्दुल कयूम, राजयोगिनी शुक्ला दीदी, राजयोगिनी चक्रधारी दीदी, जर्मनी की वरिष्ठ पत्रकार लेना बॉडवेइन सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

थाने। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सेवाकेंद्र प्रभारी डॉ. बीके सरला बहन के मार्गदर्शन में ठाणे आयकर विभाग में विशेष योग कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुजफ्फरपुर/पटना। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर बिहार विधानसभा परिसर में विशेष योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके अनीता दीदी ने विस अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार को आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया।

सटई/बिजावर, मप्र। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सटई शाखा एवं नगर पालिका परिषद के संयुक्त तत्वावधान में सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। उपसेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रीति दीदी ने सभी को राजयोग का महत्व बताया।

राजगढ़,मध्यप्रदेश। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, अतिरिक्त जिपं सीईओ अर्पित गुप्ता, भाजपा प्रदेश महिला मोर्चा की महामंत्री मोना सुस्तानी, डायट प्राचार्य शीला पाटोदिया, बीके मधु दीदी व मंडल अध्यक्ष श्याम मंडलोई।

योग से आएगा आत्मबल

भोपाल। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र स्थित गुणमोती हॉल में योग एवं आध्यात्मिकता पर आधारित विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। 'योग से आत्मबल, योग से विश्वकल्याण' की भावना के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए नशामुक्त एवं तनावमुक्त जीवन अपनाने का संदेश दिया।

12 घंटे का योग महोत्सव

बिलासपुर, छग। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर शिव अनुराग भवन में 12 घंटे का ऐतिहासिक योग महोत्सव आयोजित हुआ, जिसमें हजारों लोगों ने प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन सहभागिता की। विधायक सुशांत शुक्ला, संचालिका बीके मंजू दीदी व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया।

राजयोग ध्यान सीखा

बिलासपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज स्मृति-वन राज किशोर नगर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एसईसीएल द्वारा आयोजित कार्यक्रम का सीएमडी हरीश दुहन, बीके कविता बहन एवं अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। साथ ही मन को स्वस्थ रखने के लिए राजयोग सीखा।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

भरतपुर,राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। अतिरिक्त निदेशक, आयुष विभाग साधु रामजी, एएसपी गणपति महावर, व्यापार महासंघ अध्यक्ष संजीव गुप्ता, 7वीं आरएसी बटालियन के कमांडर राजेंद्र प्रसाद, जिला प्रभारी बीके कविता दीदी, बीके बबीता दीदी, बीके प्रवीणा बहन, बीके गीता बहन तथा बीके जुगल किशोर भाई मुख्य रूप से मौजूद रहे।

राजयोग का अभ्यास कराया

मथुरा। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर रिफाइनरी नगर सेवा केंद्र तथा आयुष विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 167वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), 16वीं वाहिनी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) एवं मथुरा रिफाइनरी केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के अधिकारियों और जवानों के लिए विशेष योग एवं राजयोग मेडिटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कृष्णा बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई।

एक पेड़, मां के नाम अभियान के तहत पौधे बांटे

शिव आमंत्रण, सारनाथ (वाराणसी)।

'एक पेड़, माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत नगर निगम वाराणसी द्वारा उपलब्ध कराए गए पौधों का वितरण प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के क्षेत्रीय मुख्यालय सारनाथ में किया गया। अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय प्रभारी ब्र.कु. परनिता दीदी एवं प्रबंधक ब्र.कु. दीपेंद्र भाई के हाथों लगभग 200 लोगों को पौधे वितरित किए गए। कार्यक्रम में क्षेत्रीय उप-प्रभारी ब्र.कु. गीता बहन, सह-प्रभारी ब्र.कु. रंजना बहन, क्षेत्रीय प्रबंधक बीके दीपेंद्र भाई, शाखा प्रभारी ब्र.कु. राधिका बहन, पार्षद अभय पाण्डेय ने उपस्थित नागरिकों को विभिन्न प्रजातियों के पौधे वितरित किए। ब्र.कु. विपिन भाई के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. पंकज, ब्र.कु. अमिता दीदी, ब्र.कु. रणधीर, गंगाधर, संदीप, मनीषा, प्रियंका, परी, पूजा, डॉ. दीपिका सिंह, रमेश सिंह, राजू, हेमलता, अशोक पटेल सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनों एवं गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता की।

जागरण विकास यात्रा का किया भव्य स्वागत

सारनाथ (वाराणसी)। उत्तर प्रदेश की विकास यात्रा के प्रति जन-जागरूकता लाने के उद्देश्य से दैनिक जागरण परिवार द्वारा आयोजित 'जागरण विकास यात्रा' का सारनाथ पहुंचने पर ब्रह्माकुमारी परिवार ने भव्य स्वागत किया। संस्था की क्षेत्रीय प्रभारी ब्र.कु. परनिता दीदी एवं प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र भाई की प्रेरणा तथा ब्र.कु. विपिन भाई के संयोजन में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में ब्र.कु. राधिका बहन, बलरामपुर सेवाकेंद्र प्रभारी ब्र.कु. अमिता बहन, मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन सहित ब्रह्माकुमारी बहनों और भाइयों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। ब्रह्माकुमारी बहनों ने विकास यात्रा रथ, यात्रियों एवं दैनिक जागरण परिवार के सदस्यों का तिलक लगाकर, पुष्पवर्षा कर और शुभकामनाएँ देकर अभिनंदन किया।

राजयोगिनी आरती दीदी लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

इंदौर। रोटरी क्लब इंदौर के 81 वर्ष पूर्ण होने रोटरी अलंकृत समारोह आयोजित किया गया। इसमें डिस्ट्रिक्ट गवर्नर सुशील मल्होत्रा, अध्यक्ष राकेश बमोरिया, अध्यक्ष हेमेंद्र सिंह, अध्यक्ष संजय दीक्षित तथा पूर्वाध्यक्ष सुधा भटनागर ने आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं आजीवन योगदान के लिए इंदौर जोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया। आप पिछले 60 वर्षों से इंदौर जोन में राजयोग मेडिटेशन, आध्यात्मिक मूल्यों और श्रेष्ठ जीवनशैली का संदेश देकर हजारों लोगों के जीवन में सुख, शांति और सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा दे रही हैं।

सीआईएसएफ में स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, बड़वाह, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान 'स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण' के अंतर्गत केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में मानसिक स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें तीन हजार से अधिक बल सदस्यों ने सहभागिता की।

नागपुर से पधारे मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस के साइंटिफिक ऑफिसर डॉ. बीके पुरुषोत्तम चौधरी ने कहा कि कार्य के प्रति निष्ठा, जिम्मेदारी, ईमानदारी और समर्पण ही सफलता का आधार हैं। उन्होंने तनाव, क्रोध, चिड़चिड़ापन और नकारात्मक सोच से बचते हुए कर्तव्य को खुशी-खुशी निभाने का संदेश दिया तथा विभिन्न मानसिक गतिविधियों के माध्यम से खुश रहने की कला सिखाई। मेंटल वेलनेस स्पीकर डॉ. बीके प्रिया दीदी ने राजयोग ध्यान का अभ्यास कराते हुए बताया कि परमात्मा, प्रकृति और जीवन में सहयोग देने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता का भाव मानसिक शांति और आंतरिक संतोष प्रदान करता है। बड़वाह सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वीणा दीदी ने कमांडेंट एस.के. सारश्वत को स्मृति चिन्ह एवं ईश्वरीय सौगात भेंट की। कमांडेंट एस.के. सारश्वत ने बल सदस्यों को सकारात्मक सोच, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा के साथ राष्ट्र सेवा करने के लिए प्रेरित किया। बीके नितिन भाई ने राजयोग ध्यान के बारे में बताया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

वरिष्ठजन: पीढ़ियों के बीच प्रेम का सेतु

वृद्धावस्था जीवन की स्वर्णिम वेला है। यह वेला संस्कार, संस्कृति और सभ्यता की त्रिवेणी है जहां आकर जीवन को नई दिशा मिलती है। यह जीवन की सांझ नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। यह जीवन के लिए बोझ नहीं वरदान है। बुजुर्ग परिवार के वह दरख्त हैं जिनकी छांव सभी को सुरक्षित महसूस कराती है। वह संस्कृति और सभ्यता के संवाहक हैं जो पीढ़ियों के बीच संतुलन और समन्वय बनाते हैं। पीढ़ियों के बीच प्रेम का सेतु बनकर जीवन को खुशहाल बनाते हैं। जिनका ज्ञान, अनुभव और मार्गदर्शन जीवन में नई प्रेरणा, उम्मीद और दिशा देता है। घर में वरिष्ठों का होना ही सम्मान और गर्व की बात है। बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था से होते हुए जब वह वृद्धावस्था में प्रवेश करते हैं तो जीवन के उतार-चढ़ाव, खट्टे-मीठे अनुभवों की स्मृति उनके साथ जीवंत रहती है। यह जीवन के वह अनुभव होते हैं जिसे उन्होंने जीया है। अनुभव से प्राप्त यह ज्ञान किताबों में नहीं मिलता है।

आज वर्तमान सामाजिक परिवेश में एकल परिवारों का बढ़ता चलन सामाजिक ताने-बाने के बिखरने का सबसे बड़ा कारण है। दादी-दादी, नाना-नानी के बीच पला-बढ़ा बच्चा उनके जीवन अनुभवों के साथ सीख और समझ के साथ बड़ा होता है। वह बच्चों को संस्कारों और संस्कृति का अमूल्य ज्ञान देकर सिंचित करते हैं। ऐसे संस्कारित पीढ़ी का भविष्य उज्जवल, प्रेरक और सफल होता है। बुजुर्गों से मिली सीख और समझ जीवनभर के लिए अमूल्य धरोहर बन जाती है, जो जीवन की विकट परिस्थितियों में ढाल बनकर मार्गदर्शन करती है। युवा पीढ़ी का भी दायित्व बनता है कि उनके प्रति उपेक्षा का नहीं बल्कि सम्मान, आदर और अपनेपन का व्यवहार हो। क्योंकि बुजुर्ग तो परिवार की शान, मान और अरमान हैं।

वरिष्ठजन स्नेह-प्यार और सम्मान के अधिकारी-

युवा पीढ़ी को चाहिए कि घर में बच्चों को वरिष्ठों का सम्मान करना सिखाएं। स्वयं भी माता-पिता, वरिष्ठजन का सम्मान करेंगे तो बच्चों में भी उनके प्रति आदर और सम्मान का भाव जागृत होगा। जिस घर में वरिष्ठजन का जीवन खुशहाल, आनंददायक, सम्मानजनक होगा, वह परिवार उतना ही सफल और खुशहाल होगा। बड़ों की दुआएं जीवन का सबसे बड़ा आशीर्वाद हैं। आज युवा जीवन की भागदौड़ में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास वरिष्ठों के लिए समय ही नहीं है। युवाओं को यह समझना होगा कि वह आपका समय चाहते हैं। बुजुर्ग चाहते हैं कि कोई उनके साथ बैठकर बातें करे, उनके हाल-चाल पूछे, उन्हें समय दे। जितना हम बड़ों के साथ वक्त बिताएंगे तो अनुभवों की विरासत से समृद्ध होते जाएंगे।

वृद्धावस्था आत्म चिंतन का समय-

कई बार वृद्धावस्था में इंसान अकेलेपन, निरादर के चलते स्वयं को परिवार में उपेक्षित महसूस करते हैं। ऐसे में उनमें घोर निराशा का भाव घर कर जाता है। यदि इस स्वर्णिम वेला में स्वयं को आत्म चिंतन और प्रभु चिंतन में समर्पित कर देते हैं, जीवन फिर से खिल उठता है। जीवन दुखों के पहाड़ की जगह मधुर संगीत बनकर गुनगुनाने लगता है। निराशा और अकेलापन कोसों दूर भाग जाता है। मन उमंग-उत्साह और नई से भर जाता है।

राजयोग से वृद्धावस्था बनी आनंदवस्था-

ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन का कमाल है कि आज हजारों वरिष्ठजन की वृद्धावस्था आनंद अवस्था बन गई है। उन्होंने जीवन के इन अमूल्य क्षणों को स्व उन्नति और परमात्म चिंतन से भरपूर कर लिया है। वह आज बच्चे की तरह रोजाना अध्यात्म का ककहरा सीखने राजयोग सेवाकेंद्र जाते हैं। राजयोग ध्यान की गहराइयों में आनंद के गोते लगा रहे हैं। ऐसे वरिष्ठजन आज समाज में प्रेरणा और संस्कारों के संवाहक बनकर नई पीढ़ी को श्रेष्ठ मार्गदर्शन दिखा रहे हैं। सेवा ही साधना को ध्येय मानकर परमात्म श्रीमत से अपने पल-पल को सफल कर नित आगे बढ़ते जा रहे हैं। जीवन का अंतिम सत्य भी प्रभु का ध्यान ही है। ऐसे में जब इस वेला में प्रभु पालना के पात्र बन जाते हैं तो जीवन धन्य-धन्य बन जाता है। तो आइए, हम सभी संकल्प लेते हैं कि बच्चों में वरिष्ठों के प्रति सम्मान के संस्कार विकसित करेंगे। उन्हें वरिष्ठों का महत्व बताएंगे। स्वयं भी उनका सम्मान करेंगे और स्नेह, प्यार के साथ व्यवहार करेंगे।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

हमारी वाणी से पहले हमारे विचार संवाद करते हैं। विश्वास का सबसे बड़ा शत्रु है- संदेह

आपसी विश्वास पारिवारिक संबंधों की नींव

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

आज लगभग हर परिवार में एक ही शिकायत सुनाई देती है—'पहले जैसा अपनापन नहीं रहा।' घर तो वही है, लोग भी वही हैं, लेकिन रिश्तों की गर्माहट कम होती जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण क्या है? यदि हम गहराई से देखें तो पाएंगे कि रिश्तों की सबसे मजबूत नींव आपसी विश्वास है। जहाँ विश्वास है, वहाँ प्रेम स्वतः प्रवाहित होता है। जहाँ विश्वास डगमगा जाता है, वहाँ प्रेम भी संदेह के बोझ तले दबने लगता है। विश्वास कोई कागज पर लिखा हुआ अनुबंध नहीं है। यह एक ऐसी ऊर्जा है जिसे हम प्रतिदिन अपने विचारों, शब्दों और व्यवहार से निर्मित करते हैं।

मेरा परिवार मुझे समझता है...

जब कोई व्यक्ति यह अनुभव करता है कि 'मेरा परिवार मुझे समझता है, स्वीकार करता है और मेरे साथ खड़ा है,' तभी उसके भीतर विश्वास का वृक्ष विकसित होता है। आज अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि सामने वाला बदल जाए तो संबंध सुधर जाएंगे। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि कहती है कि परिवर्तन की शुरुआत स्वयं से होती है। यदि मैं अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति शुद्ध, सकारात्मक और सम्मानपूर्ण विचार रखता हूँ, तो मेरी वही ऊर्जा उनके मन तक पहुँचती है। हमारी वाणी से पहले हमारे विचार संवाद करते हैं। विश्वास का सबसे बड़ा शत्रु है—संदेह। संदेह धीरे-धीरे मन में प्रवेश करता है और फिर हर छोटी बात को नकारात्मक अर्थ देने लगता है। किसी ने फोन नहीं उठाया, तो हम सोच लेते हैं कि वह जानबूझकर अनदेखा कर रहा है। किसी ने कम बात की, तो मान लेते हैं कि उसके मन में हमारे लिए प्रेम नहीं रहा। जबकि वास्तविकता अक्सर इससे बिल्कुल अलग होती है।

हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना चाहिए—क्या मैं लोगों को उनके वर्तमान व्यवहार से देखता हूँ या अपने मन की धारणाओं से? कई बार हम व्यक्ति को नहीं, अपनी बनाई हुई कहानी को देख रहे होते हैं। यही कहानी रिश्तों के बीच दूरी पैदा कर देती है।

...तो बच्चों में आत्मविश्वास विकसित होगा

परिवार कोई प्रतियोगिता का मंच नहीं है जहाँ हर समय सही सिद्ध होना आवश्यक हो। परिवार वह स्थान है जहाँ हर व्यक्ति को यह अनुभव होना चाहिए कि चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, उसे स्वीकार किया जाएगा। जब बच्चे गलती करने पर भी यह महसूस करते हैं कि माता-पिता उनका साथ नहीं छोड़ेंगे, तब उनके भीतर आत्मविश्वास विकसित होता है। जब पति-पत्नी एक-दूसरे की बात बिना भय और आलोचना के सुनते हैं, तब उनका संबंध गहराई प्राप्त करता है। जब बुजुर्गों को सम्मान और विश्वास मिलता है, तब पूरा परिवार संस्कारों से समृद्ध होता है।

विश्वास का अर्थ है—सकारात्मक दृष्टि रखना

विश्वास का अर्थ अंधविश्वास नहीं है। विश्वास का अर्थ है—सकारात्मक दृष्टि रखना, संवाद बनाए रखना और परिस्थिति से पहले व्यक्ति पर भरोसा करना। यदि किसी से भूल हो जाए तो उस भूल को उसके पूरे व्यक्तित्व का परिचय न बना दें। गलती व्यवहार में होती है, व्यक्ति के मूल स्वरूप में नहीं। प्रत्येक आत्मा मूलतः शांत, प्रेममय और पवित्र है। कभी-कभी परिस्थितियों और संस्कारों के कारण उसका व्यवहार बदल जाता है। यदि हम आत्मा के इस मूल स्वरूप को याद रखें, तो क्षमा करना और विश्वास बनाए रखना सहज हो जाता है। आज डिजिटल युग में एक नई चुनौती सामने आई है। लोग एक ही घर में रहते हैं, लेकिन मन अलग-अलग स्क्रीन पर व्यस्त हैं। संवाद कम हो रहा है और अनुमान बढ़ रहे हैं। जहाँ संवाद समाप्त होता है, वहाँ संदेह जन्म लेता है। इसलिए प्रतिदिन कुछ समय ऐसा अवश्य हो जब पूरा परिवार बिना मोबाइल के साथ बैठे, एक-दूसरे की बातें सुने और अपने अनुभव साझा करे। कई समस्याएँ केवल सुन लेने से ही समाप्त हो जाती हैं।

सत्य व्यवहार में भी दिखाई देना चाहिए

विश्वास बनाए रखने के लिए सत्यनिष्ठा भी आवश्यक है। छोटी-छोटी बातों में भी यदि हम असत्य का सहारा लेते हैं, तो धीरे-धीरे हमारी विश्वसनीयता कम होने लगती है। सत्य केवल शब्दों में नहीं, बल्कि व्यवहार में भी दिखाई देना चाहिए। जो कहते हैं, उसे निभाएँ। यदि किसी कारणवश निभा न सकें, तो ईमानदारी से स्वीकार करें। यह स्वीकारोक्ति भी विश्वास को मजबूत बनाती है। एक और महत्वपूर्ण बात है—किसी व्यक्ति की पुरानी गलतियों को बार-बार याद न दिलाना। यदि हमने क्षमा कर दिया, तो वास्तव में उसे जाने भी दें। बार-बार पुराने घावों को कुरेदना विश्वास के पौधे को सूखा देता है। विश्वास वर्तमान में जीता है, अतीत के बोझ में नहीं।

मन में विश्वास का दीपक जलाएं

राजयोग हमें सिखाता है कि पहले अपने मन में विश्वास का दीपक जलाएँ। प्रतिदिन कुछ मिनट स्वयं को शांत आत्मा का स्मरण कराएँ। परमपिता शिव से शक्ति का संबंध जोड़ें। जब भीतर शांति और स्थिरता आती है, तब हम दूसरों के प्रति भी धैर्यवान और विश्वासपूर्ण बन जाते हैं। जो स्वयं से जुड़ा हुआ है, वही दूसरों से सही रूप में जुड़ सकता है। यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य प्रतिदिन एक संकल्प करे—'मैं किसी की नीयत पर संदेह करने से पहले उससे प्रेमपूर्वक बात करूँगा। मैं आलोचना से अधिक प्रोत्साहन दूँगा। मैं सुनूँगा, समझूँगा और विश्वास बनाए रखूँगा'—तो परिवार का वातावरण स्वतः बदलने लगेगा। याद रखिए, विश्वास माँगा नहीं जाता, कमाया जाता है। और यह एक दिन में नहीं बनता, बल्कि प्रतिदिन के छोटे-छोटे व्यवहारों से निर्मित होता है। एक मुस्कान, एक सच्चा संवाद, एक निभाया हुआ वचन, एक क्षमा और एक सकारात्मक दृष्टिकोण—ये सभी विश्वास की ईंटें हैं, जिन पर सुखी परिवार का भवन खड़ा होता है।

घर को विश्वास, सम्मान और आध्यात्मिक प्रेम का मंदिर बनाएं

आइए, हम अपने घरों को केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और आध्यात्मिक प्रेम का मंदिर बनाएँ। क्योंकि जिस परिवार की नींव विश्वास पर टिकी होती है, वहाँ परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, संबंध कभी नहीं टूटते। वहाँ प्रेम केवल शब्द नहीं रहता, बल्कि जीवन का अनुभव बन जाता है। यही विश्वास परिवार को शक्ति देता है, पीढ़ियों को जोड़ता है और समाज में सशक्त, संस्कारित एवं सुखी जीवन की आधारशिला रखता है।

समस्या- समाधान

योग में परमात्म अनुभूति कैसे करें...?

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

राजयोग केवल ध्यान की एक विधि नहीं, बल्कि परमात्मा के साथ आत्मा के जीवंत संबंध का अनुभव है। हम प्रतिदिन योग करते हैं, मुरली सुनते हैं, स्मृति में बैठते हैं, फिर भी कई बार मन में प्रश्न उठता है—क्या मुझे वास्तव में परमात्मा की अनुभूति हो रही है? यदि नहीं, तो कमी कहाँ है? सबसे पहले यह समझना होगा कि परमात्म अनुभूति किसी चमत्कार का नाम नहीं है। यह मन की उस स्थिति का नाम है जहाँ आत्मा परमपिता शिव की दिव्य उपस्थिति, उनके प्रेम, शांति और शक्ति को अनुभव करने लगती है। जब आत्मा का ध्यान देह, संबंधों और परिस्थितियों से हटकर अपने मूल स्वरूप में टिक जाता है, तभी परमात्मा का स्पर्श सहज अनुभव होने लगता है।

योग का पहला कदम है- स्वयं को आत्मा अनुभव करना। जब तक हम स्वयं को शरीर मानते रहेंगे, तब तक हमारा मन शरीर और संसार के आकर्षणों में उलझा रहेगा। लेकिन जैसे ही यह स्मृति जागती है कि 'मैं इस शरीर का चालक, एक ज्योतिर्मय, चैतन्य आत्मा हूँ,' उसी क्षण भीतर एक अद्भुत हल्कापन अनुभव होने लगता है। यही परमात्मा तक पहुँचने का द्वार है।

दूसरा कदम है- परमात्मा का यथार्थ परिचय। परमपिता शिव कोई कल्पना नहीं, वे ज्योतिर्बिंदु, निराकार, सर्वशक्तिमान, प्रेम और शांति के सागर हैं। जब हम उन्हें दूर आकाश में नहीं, बल्कि अपने अत्यंत निकट अनुभव करते हैं, तब योग सहज हो जाता है। योग में दूरी नहीं, निकटता का अनुभव आवश्यक है। अक्सर हम योग करते समय परमात्मा से कुछ माँगने लगते हैं। लेकिन राजयोग हमें माँगना नहीं, जुड़ना सिखाता है। जैसे एक बच्चा अपने पिता के पास बैठता है तो उसे शब्दों की आवश्यकता नहीं होती, वैसे ही आत्मा जब परमपिता के सान्निध्य में बैठती है, तो मौन ही सबसे बड़ा संवाद बन जाता है। परमात्म अनुभूति के लिए मन का शांत होना आवश्यक है। यदि मन में शिकायतें, नकारात्मक विचार, क्रोध या व्यर्थ चिंतन चलता रहेगा, तो परमात्म शक्ति का अनुभव कठिन होगा। इसलिए योग से पहले कुछ क्षण अपने मन को हल्का करें। स्वयं को क्षमा करें, दूसरों को भी क्षमा करें और हर चिंता परमात्मा को समर्पित कर दें। खाली पात्र ही भर सकता है।

एक सुंदर अभ्यास है- स्वयं को शांति के दिव्य लोक में एक प्रकाशमय आत्मा के रूप में अनुभव करें। सामने परमपिता शिव दिव्य ज्योति के रूप में विराजमान हैं। उनकी प्रेममयी किरणें आपकी ओर प्रवाहित हो रही हैं। प्रत्येक किरण आपके मन की अशांति, भय और कमजोरी को समाप्त कर रही है। आत्मा भरती जा रही है शांति से, प्रेम से, शक्ति से। यह केवल कल्पना नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति का माध्यम है।

परमात्म अनुभूति के लिए पवित्रता जरूरी

ध्यान रहे, अनुभूति का मापदंड कोई दृश्य या अलौकिक अनुभव नहीं है। यदि योग के बाद आपका स्वभाव अधिक शांत हो रहा है, प्रतिक्रिया कम हो रही है, क्षमा बढ़ रही है, सेवा का भाव जाग रहा है और परिस्थितियों में स्थिरता आ रही है, तो समझिए कि परमात्मा की शक्ति आपके जीवन में कार्य कर रही है। यही सच्ची अनुभूति है। परमात्म अनुभूति को गहरा करने के लिए जीवन की पवित्रता भी आवश्यक है। दिनभर यदि मन संसार में बिखरा रहे और कुछ मिनट योग में बैठ जाएँ, तो मन को स्थिर होने में कठिनाई होगी। इसलिए पूरे दिन बार-बार स्वयं को आत्मा और परमात्मा को अपना साथी स्मरण करें। चलते-फिरते, कार्य करते हुए भी यह संबंध बना रहे। यही सहज राजयोग है। परमात्मा सदैव हमें अपनी शक्ति प्रदान करने के लिए तैयार हैं। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम अपने मन का द्वार खोल दें। जैसे सूर्य सदैव प्रकाश देता है, लेकिन बंद खिड़की वाले कमरे में प्रकाश प्रवेश नहीं कर पाता, वैसे ही परमात्मा का प्रेम निरंतर प्रवाहित हो रहा है। हमें केवल अपने मन की खिड़की खोलनी है। आइए, प्रतिदिन कुछ क्षण केवल अनुभव करें—मैं एक शांत, पवित्र, प्रकाशमय आत्मा हूँ। मेरे सामने मेरे परमपिता शिव हैं। उनका प्रेम मेरे अस्तित्व को भर रहा है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 July. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र